दशवाँ अध्याय
अन्य प्राकृत भाषाएँ
शौरसेनी

(१) शौरसेनी में जितने भी शब्द आते हैं, उनकी प्रकृति संस्कृत है।

(२) शौरसेनी में अनादि में वर्तमान असंयुक्त त का द होता है।[१] यथा–

मारुदिणा, मन्तिदो–त के स्थान पर द।

एदाहि, एदाओ < एतस्मात्।

विशेष–(क) संयुक्त होने पर त का द नहीं होता। यथा–अज्जउत्त और सउन्तले में त का द नहीं हुआ है।

(ख) आदि में होने पर भी त का द नहीं होता। यथा–

''तधांकरेध जधा तस्स राइणो अणुकम्पणीआ भोमि'' में तधा और तस्स के तकारों को द नहीं हुआ।

(३) कहीं-कहीं शौरसेनी में वर्णान्तर के अधः–अनन्तर वर्तमान त का द होता है।[२] यथा–

महन्दो < महान्तः–हकारोत्तर आकार को ह्रस्व और त को द।

निच्चिन्दो < निश्चिन्तः–श्च के स्थान पर च्च तथा त को द।

अन्दे-उरं < अन्तःपुरम्–त को द और पकार का लोप।

(४) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि तकार को विकल्प से दकार होता है।[३] यथा–

दाव, ताव < तावत्–विकल्प से तकार को द तथा हलन्त्य त् का लोप।

(५) शौरसेनी में थ के स्थान पर विकल्प से ध होता है।[४] यथा–

कधं < कथम् –थ के स्थान पर विकल्प से ध।

कधेदि < कथयति– ,, ,, ,,

कधिदं < कथितम्– ,, ,, ,,

---

१. तो दोनादौ शौरसेन्यामयुक्तस्य ८।४।२६० हे.।

२. अधः क्वचित् ८।४।२६१।

३. बादेस्तावति ८।४।२६२ हे.।

४. थो धः ८।४।२६७।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

नाधो, नाहो < नाथः–थ के स्थान पर विकल्प से ध और विकल्पाभाव में–थ को ह हुआ है।

राजपधो, राजपहो < राजपथः– ,, ,, ,, ,,

(६) शौरसेनी में इन्नन्त शब्दों से आमन्त्रण–सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति के एकवचन में विकल्प से इन् के न का आकार होता है।[१] यथा–

भो कञ्चुइआ < भो कञ्चुकिन्।

सुहिआ < सुखिन्।

अन्यत्र–भो तवस्सि < भो तपस्विन्

भो मणस्सि < भो मनस्विन्

(७) शौरसेनी में नकारान्त शब्दों में सम्बोधन एकवचन में विकल्प से न् के स्थान पर अनुस्वार होता है।[२] यथा–

भो रायं < भो राजन्–ज का लोप, अ स्वर शेष और अ को य, न् का विकल्प से अनुस्वार।

भो विअयवम्मं <भो विजयवर्मन्–ज लोप, अ स्वर शेष और न् को अनुस्वार।

(८) शौरसेनी में भवत् और भगवत् शब्दों में प्रथमा विभक्ति के एकवचन में नकार के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है[३]। यथा–

एदु भवं, समणे भगवं महावीरे।

(९) शौरसेनी में र्य के स्थान पर विकल्प से य्य आदेश होता है और विकल्पाभाव में ज्ज आदेश होता है।[४] यथा–

अय्यउत्तो, अज्जउत्तो < आर्यपुत्रः–र्य के स्थान पर य्य तथा विकल्पाभाव में ज्ज और पकार का लोप, त्र को त्त।

कय्यं, कज्जं < कार्यम्–र्य को विकल्प से य्य, विकल्पाभाव में ज्ज।

पय्याकुलो, पज्जाकुलो < पर्याकुलः– ,, ,,

सुय्यो, सुज्जो < सूर्यः– ,, ,,

कज्जपरवसो < कार्यपरवशः– ,, ,,

(१०) शौरसेनी में इह और ह्य् आदेश के हकार के स्थान में विकल्प से ध होता है[५]। यथा–

इध < इह–ह के स्थान पर ध हुआ है।

होध < होह–भवथ– ,, ,,

परित्तायध < परित्तायह–परित्रायध्वे–त्र को त्त और ह को ध।

---

१. आ आमन्त्ये सौ वेनो नः ८।४।२६३। २. मो वा ८।४।२६४।

३. भवद्भगवतोः ८।२।२६५। ४. न वा र्यो य्यः ८।४।२६६। ५. इह–ह्योर्हस्य ८।४।२६८।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(११) शौरसेनी में भू धातु के हकार को विकल्प से भ आदेश होता है।[१] यथा–

भोदि, होदि < भवति–प्राकृत में भू के स्थान पर हो आदेश होता है; शौरसेनी में विकल्प से भू के स्थान पर भ हुआ है।

(१२) शौरसेनी में पूर्व शब्द के स्थान पर विकल्प से 'पुरव' आदेश होता है[२]। यथा–

अपुरवं नाड्यं < अपूर्व नाट्यम्–पूर्व के स्थान पर पुरव आदेश हुआ है।

अपुरवागदं, अपुव्वागदं < अपूर्वागतम्– ,, ,,

(१३) शौरसेनी में इत् और एत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के आगे णकार का विकल्प से आगम होता है।

(१४) शौरसेनी में इदानीम् के स्थान पर दाणिं आदेश होता है।[३] यथा–

अनन्तर करणीयं दाणिं आणेवदु अय्यो।

प्राकृत—महाराष्ट्री प्राकृत में भी इदानीम् के स्थान पर दाणिं आदेश होता है।

(१५) शौरसेनी में तस्मात् के स्थान पर ता आदेश होता है।[४] यथा–

ता जाव पविसामि < तस्मात् तावत् प्रविशामि।

ता अलं एदिणा माणेण < तस्मात् अलं एतेन मानेन।

(१६) शौरसेनी में इत् और एत् के पर में रहने पर अन्त्य मकार के णकार का आगम विकल्प से होता है।[५] यथा–

जुतं णिसं, जुत्तमिमं–इकार के पर में रहने से।

सरिसं णिमं, सरिसमिमं–,, ,,

किंणेदं, किमेदं–एकार के पर में रहने से

एवं णेदं, एवमेदं– ,, ,,

(१७) शौरसेनी में एव के अर्थ में य्येव निपात से सिद्ध होता है।[६] यथा–

मम य्येव बम्भणस्स; सो य्येव एसो–एव के स्थान पर य्येव।

(१८) चेटी के आह्वान अर्थ में शौरसेनी में हञ्जे इस निपात का प्रयोग होता है।[७] यथा–

हञ्जे चदुरिके।

---

१. भुवो भः ८।४।२६९।
२. पूर्वस्य पुरवः ८।४।२७०।
३. इदानीमो दाणिं ८।४।२७७ हे.।
४. तस्मात्तः ८।४।२७८।
५. मोन्त्यण्णो वेदेतोः ८।४।२७९।
६. एवार्थे य्येव ८।४।२८०।
७. हञ्जे चेट्याह्वाने ८।४।२८१।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१९) विस्मय और निर्वेद अर्थों में शौरसेनी में हीमाणहे का निपात होता है।[१] यथा–

हीमाणहे जीवन्तवच्छा मे जणणी–विस्मय में–

हीमाणहे पलिस्सन्ता हगे एदेण नियविधिणो दुव्ववसिदेण–निर्वेद में।

(२०) ननु के अर्थ में णं का निपात होता है।[२] यथा–

णं अफलोदया; णं अय्यमिस्सेहिं पुढमं य्येव आणत्तं, णं भवं मे अग्गदो चलदि।

(२१) शौरसेनी में हर्ष प्रकट करने के लिए अम्महे निपात का प्रयोग होता है।[३] यथा–

अम्महे एआए सुम्मिलाए सुपलिगढिदो भवं।

(२२) शौरसेनी में विदूषक के हर्ष द्योतन में हीही निपात का प्रयोग होता है।[४] यथा–

हीही भो संपन्ना मणोरधा पियवयस्सस्स।

(२३) शौरसेनी में व्यापृत शब्द के त को तथा क्वचित् पुत्र शब्द के त को ड होता है। यथा–

बावडो[५] < व्यापृतः; पुडो[६], पुत्तो < पुत्रः।

(२४) शौरसेनी में गृध्र जैसे शब्दों के ऋकार के स्थान पर इकार होता है।[७] यथा–गिद्धो < गृध्रः–ऋ के स्थान पर इ, संयुक्त रेफ का लोप, ध को द्वित्व और पूर्ववर्ती ध को द, विसर्ग को ओत्व।

(२५) ब्रह्मण्य, विज्ञ, यज्ञ और कन्या शब्दों के ण्य, ज्ञ और न्य के स्थान में विकल्प से ञ्ज आदेश होता है।[८] यथा–

बम्हञ्जो < ब्रह्मण्यः–संयुक्त रेफ का लोप, ह्म के स्थान पर म्ह और ण्य के स्थान पर ञ्जो।

विञ्जो < विज्ञः–ज्ञ के स्थान पर ञ्ज, विसर्ग का ओत्व।

जञ्जो < यज्ञः–य के स्थान पर ज और ज्ञ के स्थान पर ञ्ज।

कञ्जा < कन्या–न्य के स्थान पर ञ्ज।

विकल्प भाव में–बम्हणो, विण्णो, जण्णो एवं कण्णा रूप होते हैं।

---

१. हीमाणहे विस्मय–निर्वेदे ८।४।२८२। २. णं नन्वर्थे ८।४।२८३।

३. अम्महे हर्षे ८।४। ८४। ४. हीही विदूषकस्य ८।४।२८५।

५. व्यापृते डः १२।४ वर.। ६. पुत्रेऽपि क्वचित् १२।५ वर.।

७. इ गृधसमेषु १२।६ वर.;। ८. ब्रह्मण्यविज्ञयज्ञकन्यकानां ण्यज्ञन्यानां ञ्जो वा १२।७ वर.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(२६) शौरसेनी में सर्वज्ञ और इङ्गितज्ञ शब्दों के अन्त्य ज्ञ के स्थान पर ण आदेश होता है।[१] यथा–

सव्वण्णो < सर्वज्ञः–संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व और ज्ञ के स्थान पर ण्ण, विसर्ग को ओत्व।

इंगिअण्णो < इङ्गितज्ञः–मध्यवर्ती का लोप, अ स्वर शेष और ज्ञ के स्थान पर ण्ण, विसर्ग का ओत्व।

(२७) शौरसेनी में स्त्री शब्द के स्थान पर इत्थी आदेश होता है।[२] यथा–

इत्थी < स्त्री।

(२८) शौरसेनी में इव के स्थान पर विअ आदेश होता है।[३] यथा–

विअ < इव।

(२९) शौरसेनी में विकल्प से एव के स्थान जेव्व आदेश होता है।[४] यथा–

जेव्व < एव।

(३०) आश्चर्य शब्द के स्थान पर अच्चरिअ आदेश होता है।[५] यथा–

अच्चरिअं < आश्चर्यम्; अहह अच्चरिअं अच्चरिअं < अहह आश्चर्यमाश्चर्यम्।

शौरसेनी के शब्दरूप

(३१) शौरसेनी में अत् से पर में आने वाली ङसि विभक्ति के स्थान पर आदो और आदु आदेश होते हैं तथा शब्द के टि (अ) का लोप होता है।

(३२) शौरसेनी में नपुंसकलिंग में वर्तमान शब्दों से पर में आने वाले जस् और शस् के स्थान में णि आदेश तथा पूर्व स्वर को दीर्घ भी होता है।

(३३) शौरसेनी में सर्वनाम शब्दों से पर में आने वाली–सप्तमी एकवचन की ङि विभक्ति के स्थान में सि–म्मि आदेश होते हैं।

(३४) जस् सहित अस्मद् के स्थान में वअं और अम्हे ये दोनों रूप शौरसेनी में होते हैं।

शौरसेनी के विभक्ति चिह्न

		एकवचन	बहुवचन
प्र.	पढसा	ओ	आ
द्वि.	बीआ	म्, ∴	आ, ए

१. सर्वज्ञेङ्गितज्ञयोर्णः १२।८ वर.। २. स्त्रियामित्थी १२।२२ वर.।
३. इवस्य विअ १२।२४ वर.। ४. एवस्य जेव्व १२।२३ वर.।
५. आश्चर्यस्याच्चरिअं १२।३० वर.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तृ.	तइया	ण, णं	हि, हिं
च.	चउत्थी	स्स, आय	ण, णं
पं.	पंचमी	आदु, आदो	आदो, त्तो, हिंतो, सुंतो, हि
ष.	छट्ठी	स्स	ण, णं
स.	सत्तमी	सि, म्मि	सु, सुं

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	वीरो	वीरा
बी.	वीरं	वीरे, वीरा
त.	वीरेण, वीरेणं	वीरेहि, वीरेहिं
च.	वीराय, वीरस्स	वीराणं, वीराण
पं.	वीरादो, वीरादु	वीरादो, वीराहिंतो, वीरासुंतो, वीरेहिंतो, वीरेसुंतो
छ.	वीरस्स	वीराण, वीराणं
स.	वीरंसि, वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं

इसी प्रकार सभी आकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं।

इकारान्त और उकारान्त शब्दों के विभक्ति चिह्न

	एकवचन	बहुवचन
प.	दीर्घ	अउ, अओ, णो
बी.	अनुस्वार	णो, दीर्घ
त.	णा	हि, हिं
च.	णो, स्स	ण, णं
पं.	दो, दु	त्तो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
छ.	णो, स्स	ण, णं
स.	सि	सु, सुं

शौरसेनी में इसि < ऋषि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	इसी	इसउ, इसओ, इसिणो
बी.	इसिं	इसिणो, इसी
त.	इसिणा	इसीहि, इसीहिं

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

च. छ.	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं
पं.	इसिदो, इसिदु	इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहिंतो इसीसुंतो
स.	इसिंसि, इसिम्मि	इसीसु, इसीसुं

इसी प्रकार अग्गि, मुणि, बोहि, रासि, गिरि, रवि, कवि, निहि, विहि आदि शब्दों के रूप इसी शब्द के ही समान होते हैं।

शौरसेनी में भाणु < भानु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	भाणू	भाणुणो, भाणवी, भाणओ
बी.	भाणुं	भाणुणो, भाणू
त.	भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं
च.	भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं
पं.	भाणुदो, भाणुदु	भाणुत्तो, भाणूओ; भाणूउ, भाणूहिंतो, भाणूसुंतो
छ.	भाणुणो, भाणुस्स	भाणूण, भाणूणं
स.	भाणुंसि, भाणुम्मि	भाणूसु, भाणूसुं

नपुंसकलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प.	म्	णि–पूर्व स्वर को दीर्घ
बी.	,,	,, ,,

शेष पुल्लिंग के समान प्रत्यय होते हैं।

शौरसेनी में कुल शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	कुलं	कुलाणि
बी.	कुलं	कुलाणि

शेष रूप वीर शब्द के समान होते हैं।

सर्वनाम शब्दों के रूपों में पञ्चमी एकवचन में आदो और आदु प्रत्यय जोड़कर रूप बनते हैं। यथा–

सव्वादो, सव्वादु; इमादो, इमादु; कादो, कादु; जादो, जादु आदि रूप बनते हैं। सप्तमी एकवचन में सव्वसित्वा < सर्वस्मिन्, इदरसित्वा < इतरस्मिन् आदि रूप बनते हैं। एतद् (एअ) शब्द के रूपों में विशेषता है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

एअ < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प.	एस, एसो	एदे
बी.	एदं	एदे, एदा
त.	एदेश, एदेणं, एदिणा	एदेहि, एदेहिं
च.	एदस्स	एदेसिं, एदाण, एदाणं
पं.	एदादु, एदादो	एअत्तो, एआओ, एआहिंतो, एआसुंतो
छ.	एदस्स	एदेसिं, एदाण, एदाणं
स.	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि एअम्मि, एअंस्सि	एएसु, एएसुं

क्रियारूप

(३५) शौरसेनी में ति के स्थान पर दि और ते के स्थान पर दे, दि आदेश होते हैं।

(३६) शौरसेनी में भविष्यत् अर्थ में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर स्सि होता है। भविस्सिदि, करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि आदि।

(३७) शौरसेनी में भूधातु के स्थान पर भो आदेश होता है। यथा–भोति।

(३८) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर दा धातु के स्थान में दे आदेश होता है और भविष्यत् में दइस्स होता है।

(३९) शौरसेनी में कृञ् धातु के स्थान में कर आदेश होता है। यथा– करेमि।

(४०) शौरसेनी में तिङ् के पर में रहने पर स्था धातु के स्थान में चिट्ठ आदेश होता है।

(४१) शौरसेनी में स्मृ, दृश और अस धातुओं के स्थान में क्रमशः सुमर, पेक्ख और अच्छ आदेश होते हैं।

(४२) तिप् के साथ अस् धातु के सकार के स्थान में त्थि आदेश होता है।

(४३) भविष्यत्काल में मिप् सहित अस के स्थान में विकल्प से स्सं आदेश होता है। विकल्पाभाव में धातु के स्वर का दीर्घ भी होता है। स्सं, आस्सं आदि।

(४४) बहुवचन में तकार का धकार भी होता है।

(४६) उत्तम पुरुष में म्ह होता है तथा मिप् के स्थान पर स्सं होता है।

वर्तमान में शौरसेनी के धातु प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष (Third Person)	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पुरुष (Second Person)	सि, से	इत्था, ध, ह
उत्तम पुरुष (First Person)	मि	मो, मु, म

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

शौरसेनी के भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु. (Third Person)	स्सिदि, स्सिदे	स्सिति, स्सिंसते, स्सिइरे
म. पु. (Second Person)	स्सिसि, स्सिसे	स्सिह, स्सिध, स्सिइत्था
उ. पु. (First Person)	स्सं, स्सिमि	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम

भूतकाल, आज्ञा एवं विधि में प्राकृत के समान ही प्रत्यय होते हैं।

हस् धातु के रूप

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	हसदि, हसेदे	हसन्ति, हसंते, हसिरे, हसइरे
म. पु.	हससि, हससे	हसित्था, इसध, हसह
उ. पु.	हसमि, हसेमि	हसमो, हसमु, हसम, हसिमो, हसिमु, हसिम, हसेमो, हसेमु, हसेम

भविष्यत्काल—भण

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भणिस्सिदि, भणेस्सिदि, भणिस्सिदे, भणेस्सिदे	भणिस्सिंति, भणेस्सिंति, भणिस्सिंसते, भणेस्सेंते, भणिस्सिइरे, भणेस्सिइरे
म. पु.	भणिस्ससि, भणिस्ससे	भणिस्सिह, भणिस्सिध, भणिस्सिइत्था
उ. पु.	भणिस्सं, भणिस्सिमि	भणिस्सिमो, भणिस्सिमु, भणिस्सिम

अन्य सभी धातुओं के रूप हस और भण के समान होते हैं।

कृत् प्रत्यय

(४६) शौरसेनी में क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर इय, दूण और त्ता प्रत्यय होते हैं। यथा–

इय–

भू + क्त्वा–इय = भविय < भूत्वा

हविय < भूत्वा

पढ + इय = पढिय < पठित्वा

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दूण–

भू + दूण = भोदूण < भूत्वा
हो + दूण = होदूण < भूत्वा
पढ + दूण = पढिदूण < पठित्वा

त्ता–

भू + त्ता = भोत्ता < भूत्वा
हो + त्ता = होत्ता < भूत्वा
पढ + त्ता = पढित्ता < पठित्वा

(४७) शौरसेनी में कृ और गम धातुओं से पर में आने वाले क्त्वा प्रत्यय के स्थान में विकल्प से अडुअ आदेश होता है और धातु के रि का लोप होता है। यथा–

कृ + क्त्वा = क + अडुअ (टि–आ का लोप) = कडुअ < कृत्वा।
गम् + क्त्वा = गम् + अडुअ (रि–अम् का लोप) = गडुअ < गत्वा।
विकल्पाभाव पक्ष में कृ–कर + इय = करिय < कृत्वा।
कर + दूण = करिदूण; कर + त्ता = करित्ता।
गम्–गच्छ + इय = गच्छिय; गच्छ + दूण = गच्छिदूण।

(४८) अवशेष कृदन्त रूपों में त के स्थान पर द कर दिया जाता है। यथा–

भू + तव्यं–हो + तव्वं = होदव्वं < भवितव्यम्।

कुछ शौरसेनी धातु

संस्कृत	शौरसेनी	क्रियारूप
भू	भो या हो	भोदि, होदि
दृश्	पेच्छ	पेच्छदि
ब्रू	वुच्च	वुच्चदि
कथ्	कध	कधेदि
घ्रा	जिग्घ	जिग्घदि
भा	भाअ	भाअदि
मृज्	फुस	फुसदि
घूर्ण्	घुम्म	घुम्मदि
स्तु	थुण	थुणदि
भी	भा	भादि
सृज्	पस	पसदि
चर्च्	चव्व	चव्वदि

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

ग्रह्	गेण्ड	गेण्डदि
गृह्य्	गेज्झ, घेप्प	गेज्झदि, घेप्पदि
शकृ	सक्कुण, सक्क	सक्कुणदि, सक्कदि
म्लै	मिआअ	मिआअदि
उद् + स्था	उत्थ	उत्थेदि
स्वप्	सुअ	सुअदि
शीङ्	सुआ	सुआदि
रुध्	रोव	रोवदि
रुद्	रोद	रोददि
मस्ज्	बुड्ढ	बुड्ढदि
दुह्य्	दुहीअ	दुहीअदि
उह्य्	वहीअ	वहीअदि
लिह्य्	लिहीअ	लिहीअदि

तद्धित, समास, कारक आदि सभी अनुशासन शौरसेनी में प्राकृत के समान ही होते हैं। वर्णपरिवर्तन के नियम भी शौरसेनी में प्राकृत के समान ही हैं। केवल त का द और थ का ध होना ही शौरसेनी की विशेषता है।

❑ ❑ ❑

जैनशौरसेनी

नाटकीय शौरसेनी से भिन्न होने के कारण प्रवचनसार, कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा, गोम्मटसार, समयसार आदि ग्रन्थों की भाषा को पृथक् भाषा माना गया है। इस भाषा की मूलप्रवृत्ति शौरसेनी की होने पर भी इसके ऊपर प्राचीन अर्धमागधी का प्रभाव है। जैनशौरसेनी का साहित्य नाटकों की अपेक्षा पुरातन है। षड्खण्डागम के मूल सूत्र भी जैनशौरसेनी में लिखे गये हैं। कुन्दकुन्दाचार्य और स्वामिकार्त्तिकेय ईस्वी प्रथम शताब्दी के विद्वान् हैं। अतः हमारा अनुमान है कि जैन शौरसेनी का विकसित और परिवर्तित रूप ही नाटकीय शौरसेनी है। यही कारण है कि नाटकीय शौरसेनी में जैन शौरसेनी की अनेक प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। कुछ विद्वान् शीरसेनी के इस भेद को स्वीकार नहीं करते, पर हमारे विचार से यह नाटकीय शौरसेनी की अपेक्षा भिन्न है। जैनशौरसेनी की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(१) त के स्थान पर द और थ के स्थान पर ध का होना। यथा–

विगदरागो < विगतरागः –त के स्थान पर द (प्र. सा. गा. १४)

संजुदो < संयुतः– ,, ,, ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सुविदिदो < सुविदितः–त के स्थान पर द (प्र. सा. गा. १४)
भणिदो < भणितः– ,, ,, ,, ,,
पदिमहिदो < पतिमहितः – ,, ,, (प्र. सा. गा. १६)
भूदो < भूतः– ,, ,, ,, ,,
हवदि < भवति– ,, ,, ,, ,,
परिवज्जिदो < परिवर्जितः– ,, ,, (प्र. सा. गा. १७)
ठिदि < स्थितिः– ,, ,, (प्र. सा. गा. १७)
उप्पादो < उत्पादः– ,, ,, (प्र. सा. गा. १८)
सब्भूदो < सद्भूतः– ,, ,, ,, ,,
जादो < जातः– ,, ,, (प्र. सा. गा. १९)
अदिंदिओ < अतीन्द्रियः– ,, ,, ,, ,,
वितीद < व्यतीतः– ,, ,, (धवला प्र. ख.)
पयासदि < प्रकाशयति– ,, ,, (स्वा. का. गा. २५४)
मदिणाणं < मतिज्ञानं– ,, ,, (स्वा. का. गा. २५८)

(२) जैन शौरसेनी में त के स्थान पर त और य भी पाये जाते हैं। यथा–
तिहुवणतिलयं < त्रिभुवनतिलकं–त के स्थान पर त (स्वा. का. गा. १)
जलतरंगचपला < जलतरङ्गचपला–(स्वा. का. गा. १२)
विसहते < विसहते–(स्वा. का. गा. ३९)
तिव्वतिसाए < तीव्रतृषया–त के स्थान पर त (स्वा. का. गा. ४३)
संपत्ती < सम्प्राप्तिः– ,, ,, (स्वा. का. गा. ४५१)
अधिकतेजो < अधिकतेजः– ,, ,, (प्र. सा. गा. १९)
अक्खातीदो < अक्षातीतः – ,, ,, (प्र. सा. गा. २९)
संति < सन्ति– ,, ,, (प्र. सा. गा. ३१)
मुत्तममुत्तं < मूर्तममूर्तम्– ,, ,, (प्र. सा. गा. ४१)
मुत्तिगदो < मूर्तिगतः– ,, ,, (प्र. सा. गा. ५५)

त = य– रहियं < रहितं– त के स्थान पर य (प्र. सा. गा. ५९)
सव्वगयं < सर्वगतम्– ,, ,, (प्र. सा. गा. २३, ३१)
भणिया < भणिता– ,, ,, (प्र. सा. गा. २६)
संजाया < संजाता– ,, ,, (प्र. सा. गा. ३८)
गयं < गतम्– ,, ,, (प्र. सा. गा. ४१)
महव्वयं < महाव्रतम्– ,, ,, (स्वा. का. गा. ९५)

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

रहिया < रहिता–त के स्थान पर य (स्वा. का. गा. १२८)
पडियं < पतितम्– ,, ,, (स्वा. का. गा. ३९७)

थ = ध– तधप्पदेसा < तथाप्रदेशा–थ के स्थान पर ध (प्र. सा. गा. १३७)
जध < यथा– ,, ,, (प्र. सा. गा. १३७)
तधा < तथा– ,, ,, (प्र. सा. गा. १४६)
वाध < वाथ– ,, ,, (प्र. सा. गा. १९३)
अजधा < अयथा– ,, ,, (प्र. सा. गा. ८५)
कधं < कथम्– ,, (प्र. सा. गा. ५७, ११३, १०६)

(३) जैन शौरसेनी में अर्धमागधी के समान क के स्थान पर ग भी होता है। यथा–

वेदग < वेदक–क के स्थान पर ग (ष. प्र. खं.)
एग < एक–
सगं < स्वकं– ,, ,, (प्र. सा. गा. ५४)
एगंतेण < एकान्तेन– ,, ,, (प्र. सा. गा. ६६)
ओगप्पगेहिं < योगात्मकैः– ,, ,, (प्र. सा. गा. ७३)
सागारो < साकारः– ,, ,, (गो. सा. जी. गा. ७)
अणगारो < अनागारः– ,, ,, ,,
उवसामगे < उपशामके– ,, ,, (गो. सा. जी. ६६)
खवगे < क्षपके– ,, ,, ,,
एगविगले < एकविकले– ,, ,, (गो. सा. जी. ७९)
वेदगा < वेदकाः– ,, ,, (गो. सा. जी. ९३)

(४) जैन शौरसेनी में क के स्थान पर क और य भी पाये जाते हैं। इसकी यह प्रवृत्ति भी अर्धमागधी से मिलती–जुलती है।

क = क

संतोसकरं < सन्तोषकरं (स्वा. का. गा. ३३५)
चिरकालं < चिरकालं– (स्वा. का. गा. २९३)
मणवयकाएहिं < मनोवचनकायैः (स्वा. का. गा. ३३२)
अणुकूलं < अनुकूलं (स्वा. का. गा. ४५९)
ओमकोट्ठाए < अवमकोष्टया (गो. सा. जी. गा. १३४)
हीणकमं < हीनक्रमम् (गो. सा. जी. गा. १७९)
एकसमयम्हि < एकसमये (प्र. सा. गा. १४२)

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

क = य

सामाइयं < सामायिकम् (स्वा. का. गा. ३७२)
कम्मविवायं < कर्मविपाकं (स्वा. का. गा. ३७२)
सुहयरो < सुखकरः (स्वा. का गा. ३७२)
नेरइया < नैरयिकाः (गो. सा. जी. ९३)
वियसिंदियेसु < विकलेन्द्रियेषु (गो. सा. जी. ८९)
एयवियलक्खा < एकविकलाक्षाः (गो. सा. जी. ९०)
गाहया < ग्राहकाः (गो. सा. जी. १७३)
पत्तेयं < प्रत्येकं (गो. सा जी. १८४)
ओरालियं < औरालिकं (गो. सा. जी १८४)

क = अ–स्वरशेष

अलिअं < अलीकं (स्वा. का. गा. ४०६)
आलोओ < आलोकः (स्वा. का. गा. ३४४)
नरए < नरके (प्र. सा. गा. ११४)
पज्जयट्ठिएण < पर्यायार्थिकेन (प्र. सा. गा. ११४)
वेउव्विओ < वैक्रियिकः (प्र. सा. गा. १७१)

(५) जैन शौरसेनी में मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, और प का लोप विकल्प से पाया जाता है अथवा यों कह सकते हैं कि इनका लोप अनियमित रूप से पाया जाता है। यथा–

सुयकेवलिमिसिणो < श्रुतकेवलिनमृषयः (प्र. सा. गा. ३३)–तकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य श्रुति।

लोयप्पदीवयरा < लोकप्रदीपकरा–ककार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में य श्रुति। (प्र. सा. गा. ३५)

वयणेहिं < वचनैः (प्र. सा. गा. ३४)–चकार का लोप अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य श्रुति।

सयलं < सकलम् (प्र. सा. गा. ५१)–क का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य श्रुति।

उवओगो < उपयोगः (द्र. सं. गा. ४)–प के स्थान पर व।

बहुभेया < बहुभेदा (द्र. सं. गा. ३५)–दकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान पर य श्रुति।

सुहाउ < शुभायुः (द्र. सं. गा. ३८)–यकार का लोप और उ स्वर शेष।

सायारं < साकारं (प्र. सं. गा. ४२)–ककार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान पर य श्रुति।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(६) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान ही मध्यवर्ती व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट अ या आ स्वर के स्थान में ही यश्रुति पायी जाती है। यथा–

तित्थयरो < तीर्थङ्करः–यहाँ क का लोप होने पर अवशिष्ट अ स्वर के स्थान में ही य श्रुति हुई है।

पयत्थ <पदार्थः–दकार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान में य श्रुति।

वेयणा <वेदना–दकार का लोप और अवशिष्ट अ के स्थान में य श्रुति।

आहारया < आहारका–ककार का लोप और अवशिष्ट आ को य श्रुति।

(७) उ के पश्चात् लुप्त वर्ण के स्थान में बहुधा व श्रुति पायी जाती है। यथा–

बालुवा < बालुका–ककार का लोप और अवशिष्ट आ स्वर के स्थान में व श्रुति।

बहुवं < बहुकं–ककार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में व श्रुति।

बिहुव < विधूत–तकार का लोप और अवशिष्ट स्वर के स्थान में व श्रुति।

(८) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान प्रथमा विभक्ति के एकवचन में ओ और अर्धमागधी के प्रभाव के कारण सप्तमी के एकवचन में म्मि और म्हि विभक्ति चिह्न पाये जाते हैं। षष्ठी और चतुर्थी के बहुवचन में सिं प्रत्यय जोड़ा जाता है। पञ्चमी के एकवचन में शौरसेनी के समान आदो, आदु प्रत्ययों का योग पाया जाता है।

दव्वसहावो <द्रव्यस्वभावः–प्रथमा के एकवचन में ओ प्रत्यय जोड़ा गया है।

सदविसिट्ठो < सदविशिष्टः– ,, ,, ,, ,,

एकसमयम्हि < एकसमये–(प्र. सा. गा. १४२)–सप्तमी के एकवचन में म्हि प्रत्यय जोड़ा गया है।

एगम्हि < एकस्मिन् (प्र. सा. गा. १४३)–सप्तमी के एक वचन में म्हि प्रत्यय जोड़ा गया है।

अण्णदवियम्हि < अन्यद्रव्ये (प्र. सा. गा. १५९)– ,, ,,

सुहम्मि < शुभे (प्र. सा. गा. ७९)–सप्तमी के एकववन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

चरियम्हि < चरिके (प्र. सा. गा. ७९)–सप्तमी के एकवचन में म्हि प्रत्यय जोड़ा गया है।

गब्भम्मि < गर्भे (स्वा. का. गा. ७४)–सप्तमी के एकवचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

ससरूवम्मि < स्वस्वरूपे (स्वा. का. गा. ४८३)–सप्तमी के एक वचन में म्मि प्रत्यय जोड़ा गया है।

जोगम्मि < योगे (स्वा. का. गा. ४८४)– ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

एक्कम्मि, एक्कम्हि, लोयम्मि, लोयम्हि, जैसे–वैकल्पिक प्रयोग भी जैन शौरसेनी में पाये जाते हैं।

तेसिं < तेभ्यः (प्र. सा. गा. ८२) चतुर्थी के बहुवचन में सिं प्रत्यय जोड़ा गया है।

सव्वेसिं < सर्वेषाम् (स्वा. का. १०३) षष्ठी के बहुवचन में सिं प्रत्यय जोड़ा गया है।

(९) कृ धातु का रूप जैन शौरसेनी में कुव्वदि भी मिलता है। इसका प्रयोग स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा. ३१३, ३२९, ३४०, ३५७, ३८४ आदि में देखा जाता है।

(१०) स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा और प्रवचनसार में शौरसेनी के समान करेदि का भी निम्न गाथाओं में प्रयोग मिलता है। यथा– स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा–गा. ६१, २२६, २९६, ३२०, ३५०, ३६९, ३७८, ४२०, ४४०, ४४९ और ५५१। प्रवचनसार में गा. १८५ में करेदि रूप आया है।

(११) जैन शौरसेनी में महाराष्ट्री के समान कृ धातु के रूप कुणेदि और कुणइ रूप भी निम्न गाथाओं में पाये जाते हैं। यथा–

कुणेदि–स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा. १८२, १८८, २०९, ३१९, ३७०, ३८८, ३८९, ३९६ और ४२०। प्रवचनसार में गाथा ६६ और १४९ में कुणादि क्रिया व्यवहृत की गयी है।

स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में गा. २०९, २२७, २८५ और ३१० में कृ धातु के कुणइ रूप का व्यवहार पाया जाता है।

जैन शौरसेनी में कृ धातु का करेइ रूप भी मिलता है। स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा गा. २२५ में यह रूप आया है।

(१२) जैन शौरसेनी में क्त्वा के स्थान में त्ता का व्यवहार होता है। यथा–

जाण + त्ता = जाणित्ता; वियाण + त्ता = वियाणित्ता।

णयस + त्ता = णयसित्ता; पेच्छ + त्ता = पेच्छित्ता।

(१३) जैन शौरसेनी में क्त्वा के स्थान पर य भी पाया जाता है। यथा–भवीय (प्रवचनसार गा. १२); संस्कृत के आपृच्छ के स्थान पर आपिच्छ रूप आया है। गहिय < गृहीत्वा (स्वा. का. गा. ३७३)।

(१४) स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में क्त्वा के स्थान पर च्चा का व्यवहार मिलता है। यथा–किच्चा < कृत्वा; ठिच्चा < स्थित्वा।

शौरसेनी प्राकृत के दूण और महाराष्ट्री के ऊण प्रत्यय भी संस्कृत के क्त्वा के स्थान में जैन शौरसेनी में पाये जाते हैं। यथा–गमिऊण (गोम्मटसार गा. ५०),

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

जाइऊण, गहिऊण, भुंजाविऊण (स्वा. का. गा. ३७३, ३७४, ३७५, ३७६); कादूण (स्वा. का. गा. ३७४)।

(१६) जैन शौरसेनी में शौरसेनी और अर्धमागधी के वर्णविकारसम्बन्धी अधिकांश नियम मिलते हैं। सभी क्रियाओं में त के स्थान पर नियमतः द पाया जाता जाता है। यथा–होदि, जादि < याति (प्र. सा. गा. १५), हवदि < भवति (प्र. सा. गा. १६), विज्जादि < विद्यते (प्र. सा. १७), विजाणदि < विजानाति (प्र. सा. गा. २१), जाणादि, जाणदि, णादि < जानाति (प्र. सा. गा. २५), वट्टदि < वर्तते (प्र. सा. गा. २७), परिणमदि < परिणमति (प्र. सा. गा. ३२); उप्पज्जदि < उत्पद्यते (प्र. सा. गा. ५२); मण्णदि < मन्यते (प्र. सा. गा. ७७) जायदि < जायते (प्र. सा. गा. ८४), खीयदि < क्षीयते (प्र. सा. गा. ८६)। स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा में भी गोवदि (स्वा. का. ४१८), परिहरेदि (४०३), संठवेदि (४१९), भासदि (३९८) और वहदि आदि प्रयोग पाये जाते हैं।

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मागधी

(१) मागधी की प्रकृति शौरसेनी मानी गयी है। साधारण प्राकृत भी मागधी का मूल मानी जा सकती है।

(२) मागधी में अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के प्रथमा के एकवचन में ओकारान्त रूप न होकर एकारान्त होते हैं।[१] यथा–

एशे मेशे <एष मेषः; एशे पुलिशे <एष पुरुषः; करोमि भन्ते < करोमि भदन्त।

(३) मागधी में रेफ के स्थान पर लकार और दन्त्य सकार के स्थान पर तालव्य शकार होता है।[२] यथा–

नले < नरः–र के स्थान पर ल और विसर्ग को एत्व

कले < करः– ,, ,,

विआले < विचारः– ,, ,,

हंशे < हंसः –दन्त्य के स्थान पर तालव्य श और विसर्ग को एत्व

शालशे <सारसः–आद्यन्त दन्त्य स के स्थान पर तालव्य श और रेफ को ल

शुदं <श्रुतम्–सुदं–दन्त्य स को तालव्य श और शौरसेनी के समान त को द।

शोभणं < सोहणं < शोभनम्–

(४) मागधी में यदि सकार और षकार–अलग–अलग संयुक्त हों तो उनके स्थान में स होता है। ग्रीष्म शब्द में उक्त आदेश नहीं होता।[३] यथा–

पक्खलदि हस्ती < प्रस्खलति हस्ती–यहाँ स् और त संयुक्त हैं, अतः संयुक्त स के स्थान पर तालव्य श नहीं हुआ।

बुहस्पदी < बृहस्पतिः–संयुक्त स् को तालव्य श नहीं हुआ और दन्त्य स ज्यों का त्यों बना रहा।

---

१. अत एत्सौ पुंसि मागध्याम् ८।४।२८७।

२. र–सोर्ल–शौ ८।४।२८८।

३. स–षोः संयोगे सोऽग्रीष्मे ८।४।२८९।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मस्कली < मस्करी–संयुक्त स ज्यों का त्यों और रेफ को लत्व।

शुस्कदालुं < शुष्कदारुं–ष् और क संयुक्त हैं, अतः संयुक्त मूर्धन्य ष् के स्थान पर तालव्य श न होकर दन्त्य स हो गया है और रेफ को ल हुआ है।

कस्टं < कष्टम्–संयुक्त मूर्धन्य ष के स्थान पर दन्त्य स हुआ है।

विस्नुं < विष्णुम्– ,, ,,

निस्फलं < निष्फलम्– ,, ,,

धनुस्खंडं < धनुषखण्डम्– ,, ,,

गिम्हवाशले < ग्रीष्मवासरः–ग्रीष्म शब्द में उक्त नियम लागू नहीं हुआ है।

(५) द्विरुक्त ट (ट्ट) और षकार से युक्त ठकार के स्थान पर मागधी में ष्ट आदेश होता है।[१] यथा–

पस्टे < पट्टः–ट्ट के स्थान में स्ट।

भस्टालिका < भट्टारिका–ट्ट के स्थान में स्ट और रेफ के स्थान में ल।

शुस्टु कदं < सुष्ठु कृतम्–स के स्थान पर श, ष्ठु के स्थान पर स्टु तथा ककारोत्तर ऋकार के स्थान पर अ एवं त के स्थान पर द।

कोस्टागालं<कोष्ठागारम्–ष्ठ के स्थान पर स्ट और र के स्थान पर ल हुआ।

(६) स्थ और र्थ इन दोनों वर्णों के स्थान में मागधी में सकार से संयुक्त तकार होता है।[२] यथा–

उवस्तिदे < उपस्थितः –प के स्थान पर व, स्थि के स्थान पर स्ति तथा त के स्थान पर द और विसर्ग को एत्व।

शुस्तिदे < सुस्थितः –दन्त्य स के स्थान पर तालव्य श, स्थ के स्थान पर स्त, त के स्थान पर द और विसर्ग को एत्व।

अस्तवदी < अर्थवती–र्थ के स्थान में स्त और त स्थान पर द होता है।

शस्तवहे < सार्थवाहः –दन्त्य स के स्थान पर श, र्थ के स्थान पर स्त और विसर्ग को एत्व।

(७) मागधी में ज, द्य और य के स्थान में य आदेश होता है।[३] यथा–

यणवदे < जनपदः –ज के स्थान पर य और प के स्थान पर व हुआ है।

अय्युणे < अर्जुनः –र्जु के स्थान पर य्यु और न के स्थान पर ण।

याणादि < जानाति–ज के स्थान पर य, न को ण और त के स्थान पर द।

गय्यिदे < गर्जितः–र्ज के स्थान पर य्य और त को द, विसर्ग को एत्व।

---

१. ट्ट–ष्ठयोस्टः ८।४।२९०। २. स्थ–र्थयीस्तः ८।४।२९१।

३. ज–द्य–यां यः ८।४।९२।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दुय्यणे < दुज्जणो < दुर्जनः –र्ज के स्थान पर य्य और न को ण।
वय्यिदे < वर्जितः– ,, ,, त को द और विसर्ग को एत्व।
मय्यं < मद्यम्–द्य के स्थान में य्य।
अय्य किल विय्याहले आगदे < अद्य किल विद्याधर आगतः।
यादि < यादि–य के स्थान पर य।

(८) मागधी में न्य, ण्य, ज्ञ और ज्ज इन संयुक्ताक्षरों के स्थान पर द्विरुक्त ञ्ञ होता है।[१] यथा–

अहिमञ्ञुकुमाले–अभिमन्युकुमार–न्य के स्थान पर ञ्ञ।
कञ्ञकावलणं < कन्यकावरणम्–न्य के स्थान पर ञ्ञ; र को ल।
अबम्हञ्ञं < अब्रह्मण्यम्–ण्य के स्थान पर ञ्ञ आदेश।
पुञ्ञाहं < पुण्याहम्–ण्य के स्थान पर ञ्ञ।
पञ्ञाविशाले < प्रज्ञाविशालः–ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ।
शव्वञ्ञे < सर्वज्ञः–दन्त्य स के स्थान पर श और ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ।
अवञ्ञा < अवज्ञा–ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ।
अञ्जली < अञ्जलिः –ञ्ज के स्थान पर ञ्ञ।
धणञ्जए < धनञ्जयः –ञ्ज के स्थान पर ञ्ञ।
पञ्जले < पञ्जरः– ,, ,, और रेफ को लत्व।

(९) मागधी में अनादि से वर्तमान छ के स्थान में शकार संयुक्त च (श्च) होता है।[२] यथा–

गश्च < गच्छ–'च्छ' के स्थान पर श्च।
उश्चलदि < उच्छलति–च्छ के स्थान पर श्च और त को द।
तिरश्चि पेस्कदि < तिरिच्छि पेच्छइ < तिर्यक् प्रेक्षते–च्छ के स्थान पर श्च और क्ष के स्थान पर स्क, त को द।
आवन्नवश्चले < आपन्नवत्सलः–लाक्षणिक होने से त्स के स्थान पर भी श्च आदेश।

(१०) मागधी में अनादि में वर्तमान क्ष के स्थान पर जिह्वामूलीय ∽ क आदेश होता है।[३] यथा–

य∽के < यक्षः–क्ष के स्थान पर ∽क आदेश और विसर्ग को एत्व।
ल∽क शे < राक्षसः –रेफ के स्थान पर ल, अनियमित ह्रस्व, क्ष के स्थान पर ∽क, दन्त्य स के स्थान पर तालव्य श और विसर्ग को एत्व।

---

१. न्य–ण्य–ज्ञ–ज्जां ञ्ञः ८।४।२९३।
२. छस्य श्चोनादौ ८।४।२९५।
३. क्षस्य ∽कः ८।४।२९६।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(११) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के स्थान पर स्क आदेश होता है।[१] यथा–

पेस्कदि < प्रेक्षते–संयुक्त रेफ का लोप होने से प्र के स्थान पर प, स के स्थान पर स्क तथा त को द। मागधी में ति और ते इन दोनों के स्थान पर दि आदेश होता है।

(१२) मागधी में हृदय शब्द के स्थान पर हडक्क आदेश होता है।[२] यथा–

हडक्के आलले मम < हृदये आदरो मम–हृदय के स्थान पर हडक्के आदेश, तथा द और र के स्थान पर ल, प्रथमा एकवचन में विभक्ति ए का संयोग।

(१३) मागधी में अस्मद् शब्द को प्रथमा एकवचन में सु विभक्ति में हके, हगे और अहके ये तीन आदेश होते हैं।[३] यथा–

हके, हगे, अहके भणामि < अहं भणामि।

(१४) मागधी में शृगाल शब्द के स्थान पर शिआल और शिआलक आदेश होते हैं।[४] यथा–

शिआले आअच्छदि, शिआलके आअच्छदि < शृगाल आगच्छति।

शब्दरूपों के नियम

(१५) मागधी में प्रथमा एकवचन में एत्व होता है। यथा–पुलिशे < पुरुषः।

(१६) मागधी में अवर्ण से पर में आने वाले ङस्–षष्ठी के एकवचन के स्थान में विकल्प से आह आदेश होता है। आह के पूर्ववर्ती टि का लोप होता है।[५] यथा–

हगे न ईदिशाह कम्माह काली < अहं न ईदृशस्य कर्मणः कारी; भगदत्त–शोणिदाह कुंभे; पक्ष में–भीमशेणस्स पश्चादो हिण्डीअदि।

(१७) मागधी में अवर्ण से पर में विद्यमान आम् के स्थान में विकल्प से आहँ आदेश होता है और पूर्व के टि का लोप हो जाता है।[६] यथा–

आहँ–येषाम्; विकल्पाभाव से–याणं < येषाम्

(१८) मागधी में अहम् और वयं के स्थान पर हगे आदेश होता है।[७] यथा–

हगे शक्कावदालतिस्तणिवाशी धीवले < अहं शक्रावतारतीर्थनिवासी धीवरः।

(१९) मागधी में अकारान्त शब्दों को सु पर रहते इ, ए होते हैं और सु का लोप होता है।[८] यथा–

एशि लाआ < एष राजा–यहाँ ष को श और अकार को इकार।

एशे पुलिशे < एष पुरुषः–एत्व होने से एशे होता है।

---

१. स्कः प्रेक्षाचक्षोः ८।४/२९७। २. हृदस्य हडक्कः ११।६ वर.।

३. अस्मदः सौ हके-हगे-अहके ११।९ वर.।

४. शृगालशब्दस्य शिआलाशिआलकाः ११।१७ वर.।

५. अवर्णाद्वा ङसो डाहः ८।४।२९९ हे.। ६. आमो डाहँ वा ८।४।३०० हे.।

७. अहंवयमोर्हगे ८।४।३०१ हे.। ८. अत इदेतौ लुक् च ११।१० व.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(२०) ह्रस्व अकारान्त शब्द के अन्तिम अकार को सम्बुद्धि पर रहते दीर्घ होता है।[१] यथा–

पुलिशा आगच्छ < हे पुरुष आगच्छ–सम्बोधन होने से अकार को दीर्घ।
माणुशा आगच्छ < हे मानुष आगच्छ ,, ,,

विभक्तिचिह्न

	एकवचन	बहुवचन
पढमा	ए	आ
बीआ	अनुस्वार	आ
तइआ	ण, णं	हि, हिं, हिँ
चउत्थी, छट्ठी	ह, स्स	हँ, ण, णं
पंचमी	आदो, आदु	त्तो, ओ, उ, हि, हिन्तो, शुंतो
सप्तमी	सि, म्मि	शु, शुं

वील–वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पढमा	वीले	वीला
बीआ	वीलं	वीला
तइया	वीलेण, वीलेणं	वीलेहि, वीलेहिं, वीलेहिँ
चउत्थी	वीलाह, वीलस्स	वीलाहँ, वीलाण, वीलाणं
पंचमी	वीलादो, वीलादु	वीलत्तो, वीलओ, वीलउ, वीलाहिन्तो, वीलाशुन्तो
छट्ठी	वीलाह, वीलस्स	वीलाहँ, वीलाण, वीलाणं
सप्तमी	वीलंसि, वीलम्मि	वीलेशु, वीलेशुं
संबोहण	हे वीले	हे वीला

अन्य अकारान्त शब्दों के रूप भी वील शब्द के समान होते हैं।

नपुंसकलिंग में शौरसेनी के समान ही शब्दरूप बनते हैं।

सर्वनामवाची शब्द मागधी में वील < वीर के समान होगें। यहाँ उदाहरण के लिए कुछ शब्द रूप प्रस्तुत किये जाते हैं।

शव्व < सर्व के शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
पढमा	शव्वे	शव्वा
बीआ	शव्वं	शव्वा

---

१. अदीर्घः सम्बुद्धौ ११।१३ व.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तइया	शव्वेण, शव्वेणं	शव्वेहि, शव्वेहिं, शव्वेहिँ
चउत्थी	शव्वाह, शव्वस्स	शव्वाहँ, शव्वाण, शव्वाणं
पंचमी	शव्वादो, शव्वादु	शव्वत्तो, शव्वओ, शव्वउ, शव्वाहिन्तो, शव्वाशुन्तो
छट्ठी	शव्वाह, शव्वस्स	शव्वाहँ, शव्वाण, शव्वाणं
सप्तमी	शव्वंसि, शव्वम्मि	शव्वेशु, शव्वेशुं
संबोहण	हे शव्वे	हे शव्वा

त, ण < तत् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	शे	ते, णे
वी.	तं, णं	ते, ता, णे, णा
त.	तेण, तेणं, तिणा णेण, णेणं	तेहि, तेहिं, तेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ
च.	ताह, तस्स	ताहँ, तेशिं, णेशिं, ताणं, ताण, णाण, णाणं
प.	तादो, तादु	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, तेहि, ताहिंतो, तेहिंतो, ताशुंतो, तेशुंतो णत्तो, णाओ आदि
छ.	ताह, तस्स	ताहँ, तेशिं, णेशिं, ताण, णाण
स.	ताहे, ताला, तइआ, तम्मि, तस्सिं, तहिं, तरुत्थ, णम्मि, णस्सिं, णत्थ	णेशु, पोशुं

एअ < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प.	एशे, एश	एदे
वी.	एदं	एदे, एदा
त.	एदेण, एदेणं, एदिणा	एदेहि, एदेहिं, एदेहिँ
च.	शे, एदाह	शिं, एदाहँ, एदाण, एदाणं
पं.	एदादु, एदादो	एअत्तो, एआउ, एआओ, एआहि, एएहि, एआहिंतो, एएहिंतो, एआशुंतो, एएशुंतो

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

छ.	शे, एदाह	शिं, एदाहँ
स.	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि, एअम्मि, एअस्सि	एएशु, एएशुं

इकारान्त और उकारान्त शब्दों के मागधी विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	**बहुवचन**
प.	दीर्घ	अउ, अओ, णो, ०
वी.	अनुस्वार	णो, ०
त.	णा	हि, हिं, हिँ
च.	ह	हँ, ण
पं.	दो, दु	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, शुन्तो
छ.	ह	हँ, ण, णं
स.	शि	शु, शुं

इशि < ऋषि शब्द के रूप

	एकवचन	**बहुवचन**
प.	इशी	इशउ, इशओ, इशिणी, इशी
वी.	इशिं	इशिणो, इशी
त.	इशिणा	इशीहि, इशीहिं, इशीहिँ
च.	इशिह	इशिहँ, इशीण, इशीणं
पं.	इशिदो, इशिदु	इशित्तो, इशिओ, इशीउ, इशीहिंतो, इशीशुंतो
छ.	इशिह	इशिहँ, इशीण, इशीणं
स.	इशिंशि	इशीशु, इशीशुं
सं.	हे इशि, हे इशी	हे इशउ, हे इशओ, हे इशिणो

मागधी में इन्-अन्तवाले शब्दों में सम्बोधन एकवचन में विकल्प से न के स्थान पर अकार आदेश होता है।

हे दंडिआ, हे दण्डी < दण्डिन्
हे शुहिआ, हे शुहि < सुखिन्
हे तवश्शिआ, हे तवस्सि < तपस्विन्

उकारान्त—भाणु शब्द

	एकवचन	**बहुवचन**
प.	भाणू	भाणुणो, भाणओ, भाणउ, भाणू
वी.	भाणुं	भाणुणो, भाणू

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

त.	भाणुणा	भाणूहि, भाणूहिं, भाणूहिँ
च.	भाणुह	भाणुहँ
पं.	भाणुदो, भाणुदु	भाणुत्तो, भाणूओ, भाणूउ भाणूहिंतो, भाणूशुंतो
छ.	भाणुह	भाणुहँ, भाणूण, भाणूणं
स.	भाणुंशि, भाणुम्मि	भाणूशु, भाणूशुं
सं.	हे भाणु, हे भाणू	हे भाणुणो, हे भाणओ, हे भाणू

इसी प्रकार यउ, गुलु < गुरु, शाहु, मेलु < मेरु, कालु < कारु, लाहु < राहु आदि उकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं। उकारान्त या इकारान्त शब्दों के रूप मागधी की प्रवृत्ति के अनुसार ही वर्णविकृति कर बनाने चाहिए। व्यञ्जनान्त या शेष स्वरान्त शब्द प्राकृत की शब्दरूपावली में मागधी की प्रवृत्ति के अनुसार वर्णविकृति करने से निष्पन्न होते हैं।

मागधी में प्रथमा, चतुर्थी, पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति में ही अन्तर पड़ता है। स्पष्टीकरण के लिए अकारान्त पितृ शब्द के रूप भी दिये जाते हैं।

पिउ, पिआ, पिआल < पितृ

	एकवचन	बहुवचन
प.	पिआ, पिअले	पिअला, पिउणो, पिअओ
वी.	पिअलं	पिअले, पिअला, पिउणो
त.	पिअलेण, पिअलेणं, पिउणा	पिअलेहि, पिअलेहिं, पऊहिं
च., छ.	पिअलाह	पिअलाहँ, पिअलाण
पं.	पिअलादो, पिअलादु	पिअलत्तो, पिअलाओ, पिअलाहिंतो, पिअलाशुंतो
स.	पिअले, पिअलंशि, पिअलम्मि, पिउंशि, पिउम्मि	पिऊशु, पिऊशुं
सं.	हे पिअ, हे पिअले	हे पिक्षला, हे पिउणो

इसी प्रकार दाउ, दायाल < दातृ का प्रथमा के एकवचन में दायाले, चतुर्थी–षष्ठी के एकवचन में दायालाह और बहुवचन में दायालाहँ, पञ्चमी के एकवचन में दायालादो, दायालादु और सप्तमी के एकवचन में दायालंशि तथा सप्तमी के बहुवचन में दायालेशु, दायालेशुं रूप बनते हैं।

मागधी के धातुरूप

मागधी की धातुरूपावली शौरसेनी के समान होती है। अतः मागधी के धातुचिह्न शौरसेनी के समान ही हैं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(२१) मागधी में व्रज धातु के जकार को ञ आदेश होता है। यथा– वञ्जदि < व्रजति।

(२२) प्रेक्ष और आचक्ष धातु के क्ष के स्थान पर स्क आदेश होता है। यथा– पेस्कदि < प्रेक्षते, आचस्कदि < आचक्षते।

(२३) मागधी में स्था धातु के तिष्ठ के स्थान पर चिष्ठ आदेश होता है। यथा– चिष्ठदि < तिष्ठति। मतान्तर से प्राकृत के समान चिट्ठ भी आदेश होता है।

हशधातु—वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	हशदि, हशेदि	हशंति, हशंते
म. पु.	हशशि, हशशे, हशेज्ज	हशइत्था, हशध, इशेध
उ. पु.	हशामि, हशमि, हशेमि हशेज्ज	हशमो, हशामो, हशिमो, हशेमो, हशमु, हशम

भविष्यत्काल—भण

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भणिस्सिदि, भणेस्सिदि, भणिस्सदे, भणेस्सदे	भणिस्सिंति, भणेस्सिंति, भणिस्सिंते भणेस्सिंते, भणेस्सिले, भणेस्सिइले
म. पु.	भणिस्सिशि, भणेस्सिशि, भणिस्सिशे, भणेस्सिशे	भणिस्सिह, भणेस्सिह, भणिस्सिध, भणेस्सिध, भणिसिइत्था
उ. पु.	भणिस्सं, भणेस्सं, भणेस्सिमि	भणिस्सिमो, भणेस्सिमो, भणिस्सिमु, भणेस्सिमु

शेष सभी धातुरूप और कृदन्त रूप शौरसेनी के समान मागधी में होते हैं।

मागधी के कतिपय विशेष शब्द

माशे < माषः	दुय्यणे < दुर्जनः
विलाशे < विलासः	लस्कशे < राक्षसः
यायदे < जायते	दक्के < दक्षः
पलिचये < परिचयः	हक्के, अहके, हगे < अहम्
गहिदच्छले < गृहीतच्छलः	एशि लाआ < एष राजा
वियले < विजलः	हशिदु, हशिदि, हशिद < हसितः
णिज्झले < निर्झरः	पुलिशे < पुरुषः
हडक्के < हृदयः	चिष्ठदि < तिष्ठति
अलले < आदरः	कडे < कृतः
कय्ये < कार्यम्	मडे < मृतः
कारिदाणि < कृत्वा	सहिदाणि < सोढ्वा
गडे < गतः	शिआले, शिआलके < शृगालः

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अर्धमागधी

साधारणतः अर्धमागधी शब्द की व्युत्पत्ति 'अर्धं मागध्याः' अर्थात् जिसका अर्धांश मागधी का हो वह भाषा 'अर्धमागधी' कहलायेगी। परन्तु जैनसूत्र ग्रन्थों की भाषा में उक्त व्युत्पत्ति सम्यक् प्रकार घटित नहीं होती। हाँ, नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के अधिकांश लक्षण पाये जाते हैं।

अर्धमागधी शब्द की एक व्युत्पत्ति में 'अर्धमगधस्येयं' अर्थात् मगध देश के अर्धांश की भाषा को अर्धमागधी कहा जायेगा। इस व्युत्पत्ति का समर्थन ईस्वी सन् सातवीं शताब्दी के विद्वान् जिनदासगणि महत्तर ने निशीथचूर्णि-नामक ग्रन्थ में– ''पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं'' द्वारा किया है। अर्धमगध शब्द की व्याख्या करते हुए'' मगहद्ध विसयभासानिबद्धं अद्धमागहं'' अर्थात् मगधदेश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निबद्ध होने से प्राचीन सूत्रग्रन्थ अर्धमागध कहलाते हैं। अर्धमागधी में अठ्ठारह देशी भाषाएँ मिश्रित मानी गयी हैं। बताया है–''अट्ठारसदेसीभासानिययं वा अद्धमागहं''। अन्यत्र भी इसे सर्वभाषामयी कहा है।[१]

अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध और शूरसेन (मथुरा) का मध्यवर्ती प्रदेश अयोध्या है। तीर्थङ्करों के उपदेश की भाषा अर्धमागधी मानी गयी है। आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव अयोध्या के निवासी थे, अतः अयोध्या में ही इस भाषा की उत्पत्ति हुई मानी जायेगी। पर भाषा की भौगोलिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने पर अवगत होता है कि शौरसेनी या पूर्वी हिन्दी के साथ इस भाषा का विशेष सम्बन्ध नहीं है। महाराष्ट्री प्राकृत या आधुनिक मराठी के साथ इस भाषा का घनिष्ठ संबन्ध पाया जाता है। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर डॉ. हॉर्नले[२] ने बताया है कि अर्धमागधी ही आर्ष प्राकृत है, और इसी से परवर्ती काल में नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी निकली हैं। आचार्य हेमचन्द्र के

---

१. सर्वार्धमागधीं सर्वभाषासु परिणामिनीम्।
सर्वेषां सर्वतो वाचं सार्वज्ञीं प्रणिदध्महे॥
–वाग्भट्ट काव्यानुशासन पृ. २
आरिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी।
–काव्यालंकार की नमिसाधुकृत टीका २, १२।

२. "It thus seems to me very clear, that the Prakrit of chanda is the Arsha or ancient (Porana) from the Ardhamagadhi, Maharashtra and Sauraseni"—Introduction to Prakrit Lakshana of chanda Page XIX

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

प्राकृत व्याकरण के अध्ययन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री कहा गया है। आर्ष प्राकृत से अर्धमागधी अभिप्रेत है। उन्होंने 'आर्षम्' ८।१।३ सूत्र में ''आर्षं प्राकृतं बहुलं भवति'' तथा ''आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते'' कथन में आर्ष–ऋषिभाषित प्राकृत के अनुशासन की बात कही है।

अर्धमागधी के प्रथमा एकवचन में मागधी के समान ए प्रत्यय जोड़ा जाता है। ऋ में समाप्त होने वाले धातु के त के स्थान में अर्धमागधी में ड होता है। अर्धमागधी की यह प्रवृत्ति भी मागधी से मिलती जुलती है। अर्धमागधी की वर्णपरिर्वतनसम्बन्धी निम्न विशेषताएँ है।

(१) अर्धमागधी में दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होते हैं। यथा–

ग–पगप्प < प्रकल्प–प्र के स्थान पर प, क को ग और संयुक्त ल का लोप तथा द को द्वित्व।

आगर < आकर–क के स्थान पर ग।

आगास < आकाश–क को ग और श के स्थान पर दन्त्य स।

पगार < प्रकार–प्र को प और क को ग।

सावग < श्रावक–संयुक्त रेफ का लोप, श को स और क के स्थान पर ग।

विवज्जग < विवर्जक–संयुक्त रेफ का लोप, ज को द्वित्व और क को ग।

अहिगरणं < अधिकरणं–ध के स्थान पर ह और क के स्थान पर ग।

णिसेवग < निषेवकः–न के स्थान पर ण, मूर्धन्य ष को स और क को ग।

लोगे < लोकः–क के स्थान पर ग और एकवचन का ए प्रत्यय।

आगइ<आकृतिः–क के स्थान पर ग, ककारोत्तर ऋ को अ, तकार का लोप।

त–आराहत < आराधक–ध के स्थान पर ह, क के स्थान पर त।

सामातित < सामायिक–य के स्थान पर त और क के स्थान पर त।

विसुद्धित < विशुद्धिक–तालव्य श को दन्त्य स और क को त।

अहित < अधिक–ध के स्थान पर ह और क को त।

साउणित < शाकुनिक–तालव्य श को दन्त्य स, ककार का लोप और उ स्वर शेष, न को ण तथा अन्तिम क के स्थान पर त।

णेसज्जित < नैषधिक–ऐकार के स्थान पर एकार, ष को स, ध के स्थान पर ज्ज और क को त हुआ है।

वीरासणित < वीरासनिक–न को ण और क के स्थान पर त।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वड्ढति < वर्धकि–रेफ का लोप, ध को द्वित्व और मूर्धन्य ढ, पूर्ववर्ती ढ को ड तथा क के स्थान पर त।

नेरतित < नैरयिक–ऐकार का एकार, य को त और क को त।

सीमंतत < सीमंतक–क को त हुआ है।

नरतातो < नरकात्–क के स्थान पर त।

माडंबित < माडम्बिक–क के स्थान पर त।

कोडुंबित < कौटुम्बिक–औकार को ओकार, ट को ड तथा क को त।

सचक्खुत्तेण < सचक्षुष्केण–क्ष के स्थान पर क्ख और क के स्थान पर त।

कूणित < कृणिक–क को त।

य–काइयं < कायिक–मध्यवर्ती यकार का लोप और क को य।

लोय < लोक–क को य हुआ है।

अवयारो < अवकारो–क के स्थान पर य।

(२) दो स्वरों के बीच का असंयुक्त ग प्रायः कायम रहता है। कहीं–कहीं त और य भी होता है। यथा–

ग–आगम < आगम–ग के स्थान पर ग रह गया है।

आगमणं < आगमनं–ग के स्थान पर ग और न को ण हुआ है।

अणुगामिय < अनुगामिक–ग के स्थान पर ग, न के स्थान पर ण और क के स्थान पर य हुआ है।

आगामिस्स <आगमिष्यत्–ग के स्थान पर ग, संयुक्त य का लोप और स को द्वित्व; अन्तिम हल् त् का लोप।

भगवं < भगवन्– ग के स्थान पर ग और न् को अनुस्वार।

त–अतित < अतिग–ग के स्थान पर त।

य–सायर < सागर–ग के स्थान पर य।

(३) दो स्वरों के बीच में आने वाले असंयुक्त च और ज के स्थान में त और य दोनों ही होते हैं। यथा–

त–णारात < नाराच–न के स्थान पर ण और च के स्थान पर त।

वति < वचस्–अन्त्य हल् स् का लोप और च के स्थान पर त तथा इकार।

पावतण < प्रवचन–प्र के स्थान पर प और च के स्थान पर त।

य–कयाती < कदाचित्–दकार का लोप, आ शेष और य श्रुति, च के स्थान पर य और अन्तिम व्यञ्जन त् का लोप एवं पूर्ववर्त्ती इ को दीर्घ।

वायणा < वाचना–च को य और क को ण।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

उवयार < उपचार–प को व और च को य।

लोय < लोच–च के स्थान पर य।

आयरिय < आचार्य–च को य और स्वरभक्ति के नियमानुसार र् तथा य को पृथक्करण, इ स्वर का आगम।

ज = त–भोति < भोजिन्–ज के स्थान पर त और अन्तिम न् का लोप।

वतिर < वज्र–ज के स्थान पर त और र् का पृथक्करण तथा त में ह्रस्व इकार का संयोग।

पूता < पूजा–ज के स्थान पर त।

रातीसर < राजेश्वर–ज के स्थान पर त, ऐकार को ईत्व, संयुक्त व का लोप और तालव्य श की दन्त्य स।

अत्तते < आत्मजः–संयुक्त म का लोप और त को द्वित्व तथा ज को त।

पयाय < प्रजात–प्र के स्थान पर प, जकार को य और त का लोप, आ स्वर शेष तथा यश्रुति।

कामज्झया < कामध्वजा–ध्व के स्थान पर ज्झ, ज के स्थान पर य।

अत्तय < आत्मज–संयुक्त म का लोप, त को द्वित्व और ज को य।

(४) दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्रायः बना रहता है; कहीं–कहीं इसका य होता है। यथा–

वंदति < वन्दते–त के स्थान पर त ही बना रहा। आत्मनेपद की क्रिया परस्मैपद में परिवर्तित हो गई।

नमंसति < नमस्यति–संयुक्त य का लोप और म के ऊपर अनुस्वार।

पज्जुवासति < पर्युपास्ते–संयुक्त रेफ का लोप, य को ज और द्वित्व। प के स्थान पर व और स्वरभक्ति के अनुसार पृथक्करण, ए का इत्व।

जितिंदिय < जितेन्द्रिय–एकार को इत्व, संयुक्त रेफ का लोप और त ज्यों का त्यों बना हुआ है।

सतत < सतत–तकार जैसे का तैसे बना हुआ है।

अंतरित < अन्तरित– ,, ,,

घेवत < धेवत– ,, ,,

जाति < जाति– ,, ,,

आगति < आकृति–क के स्थान पर ग, ऋकार को इ और त की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है।

विहरति < विहरति–त की स्थिति ज्यों की त्यों बनी है।

पुरतो < पुरतः–विसर्ग को विकल्प से ओत्व और त ज्यों का त्यों बना है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

करेति < करोति–ओकार को एत्व, त ज्यों का त्यों।

तते < ततः–विसर्ग को एत्व, ,, ,,

संलवति < संलपति–प को व और ,, ,,

पभिति < प्रभृति–प्र को प, भकारोत्तर ऋकार को इकार और त ज्यों का त्यों बना रहा।

करयल < करतल–मध्यवर्ती त के स्थान पर य हुआ।

(५) दो स्वरों के बीच में स्थित द का द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं-कहीं य भी होता है। यथा–

द–पदिसो < प्रदिशः–प्र को प, द के स्थान पर द और श को स हुआ है।

अणादियं < अनादिकं–न के स्थान पर ण, द को द और क के स्थान पर य।

वदमाण < वदत्– द के स्थान पर द और संस्कृत के शतृ प्रत्यय के स्थान पर माण हुआ है।

णदति < नदति–न के स्थान पर ण और द को द ही रह गया है।

जणवद < जनपद–न के स्थान पर ण, प के स्थान पर व और द को द।

वेदिहिती < वेदिष्यति–संयुक्त य का लोप, ष् को स और स के स्थान पर ह तथा द और त के स्थान पर उक्त दोनों वर्ण ही विद्यमान हैं।

त–जता < यदा–य के स्थान पर ज और द को त।

पात < पाद–द के स्थान पर त।

निसात < निषाद–मूर्धन्य ष को स और द को त।

नती < नदी–द को त।

मुसावात < मृषावाद–मकारोत्तर ऋ के स्थान पर उ, ष की स और द के स्थान पर त हुआ है।

वातित < वादिक–द के स्थान पर त और क के स्थान पर भी त।

अन्नता < अन्यदा–संयुक्त य का लोप, न को द्वित्व और द को त।

कताती < कदाचित्–द के स्थान पर त, च को त और अन्तिम हल् त् का लोप तथा त् के पूर्ववर्ती इकार को दीर्घ।

जति < यदि–य को ज और द को त।

चिरातीत < चिरादिक–द और क के स्थान पर त, इकार को दीर्घ।

य–पडिच्छायण < प्रतिच्छादन–प्रति के स्थान पर पडि, द को य और न को ण।

चउप्पय < चतुष्पद–तकार का लोप, उ स्वर शेष, संयुक्त ष का लोप, प को द्वित्व और द के स्थान पर य।

कयत्थो < कदर्थ–द के स्थान पर य, र्थ को त्थ।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

उयरं < उदरम्–द को य।

पयाहिणा < पदक्षिणा–प्र को प, द के स्थान पर य और क्ष के स्थान पर ह हुआ है।

(६) दो स्वरों के मध्यवर्ती प के स्थान पर व होता है। यथा–

पावग < पापक–मध्यवर्ती प को व और अन्त्य क को ग हुआ है।

संलवति < संलपति– ,, ,, ,, ,,

सोवयार < सोपचार–प को व और च के स्थान पर य हुआ है।

अतिवात < अतिपात–प के स्थान में व हुआ है।

उवणीय < उपनीत–प के स्थान में व और न को ण, तथा त को य हुआ है।

अज्झोववयण्ण < अध्युपपन्न–ध्य के स्थान पर ज्झ, उ को ओत्व, उत्तरवर्ती दोनों पकारों को व तथा न को ण।

उवगूढ < उपगूढ–प की व हुआ है।

आहेवच्च < आधिपत्य–ध के स्थान पर ह, इकार को एत्व, प को व और त्य को च्च।

तवय < तपक–प को व और क को य।

ववरोपित < व्यपरोपित–संयुक्त य का लोप, प को व हुआ है।

(७) स्वरों का मध्यवर्ती य प्रायः ज्यों का त्यों रह जाता है और कहीं–कहीं उसका त भी हो जाता है। यथा–

वायव < वायव–य ज्यों का त्यों स्थित है।

पिय < प्रिय–प्र के स्थान पर प और य ज्यों का त्यों वर्तमान है।

निरय < निरय –य ज्यों का त्यों वर्तमान है।

इंदिय < इन्द्रिय–संयुक्त रेफ का लोप और य ज्यों का त्यों।

गायइ < गायति–य ज्यों का त्यों, त लोप और इ शेष।

त–सिता < सिया–य के स्थान पर त।

सामातित < सामायिक–य के स्थान पर त और क को भी त हुआ।

पालतिस्संति < पालयिष्यन्ति–य के स्थान पर त और ष्य को स्स।

परितात < पर्याय–स्वरभक्ति के नियम से र्य का पृथक्करण और इ का आगम दोनों य के स्थान पर त।

णातग < नायक–न के स्थान पर ण, य को त और क के स्थान पर ग।

गातति < गायति–य के स्थान पर त।

ठाति–स्थायिन्–स्था के स्थान पर ठा, य को त और अन्त्य न् का लोप।

साति < शाथिन्–तालव्य श को स, य के स्थान पर त और अन्त्य न् का लोप।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

नेरतित < नैरयिक–ऐकार को एकार, य के स्थान में त और क को भी त।

इंदित < इन्द्रिय–संयुक्त रेफ का लोप और य के स्थान पर त।

(८) दो स्वरों के मध्यवर्ती व के स्थान पर व, त और य होता है। यथा–

व–वायव < वायव–व के स्थान पर व ही रह गया है।

गारव < गौरव–औकार के स्थान पर आकार और व के स्थान पर व।

भवति < भवति–व के स्थान पर व ही रहा।

अणुवीति < अनुविचिन्त्य–न के स्थान पर ण, इ को ईत्व, व के स्थान पर व और चिन्त्य के स्थान पर ति।

त–परिताल < परिवार–व के स्थान पर त और र के स्थान ल।

कति < कवि–व के स्थान पर त।

य–परियट्टण < परिवर्तन–व के स्थान पर य, र्त के स्थान पर ट्ट और न को ण।

परियट्टणा < परिवर्तना– ,, ,, ,, ,,

(९) शब्द के आदि, मध्य और संयोग में सर्वत्र ण की तरह न भी स्थित रहता है। यथा–

नई < नदी–न ज्यों का त्यों और द का लोप, ई स्वर शेष।

नायपुत्त < ज्ञातपुत्र–ज्ञ के स्थान पर न, त को य और त्र के स्थान पर त्त।

आरनाल < आरनाल–न के स्थान पर न ही रह गया है।

अनिल < अनिल– ,, ,, ,,

पन्ना < प्रज्ञा–प्र को प और ज्ञा के स्थान पर न्ना।

विन्नु < विज्ञ–ज्ञ के स्थान पर न्नु।

सव्वन्नु < सर्वज्ञ–संयुक्त रेफ का लोप, व को द्वित्व और ज्ञ के स्थान पर न्न और अकार को उत्व।

(१०) एव के पूर्व अम् के स्थान में आम् होता है। यथा–

जामेव < यमेव–य के स्थान पर ज और एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम्।

तामेव < तमेव–एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम्।

खिप्पामेव < क्षिप्रमेव–क्ष के स्थान पर ख, संयुक्त रेफ का लोप और प को द्वित्व तथा एव के पूर्ववर्ती अम् को आम्।

एवामेव < एवमेव–एव के पूर्ववर्ती अम् के स्थान पर आम्।

पुव्वामेव < पूर्वमेव–पूर्व के स्थान पर पुव्व और एव के पूर्ववर्ती अम् को आम्।

(११) दीर्घ स्वर के बाद इति वा के स्थान में ति वा और इ वा का प्रयोग होता है। यथा–

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

इंदमहे ति वा < इन्द्रमह इति वा–इति वा के स्थान में ति वा।

इंदमहे इ वा < इन्द्रमह इति वा– ,, ,, ,, इ वा।

(१२) यथा और यावत् शब्द के य का लोप और ज दोनों ही देखे जाते हैं। यथा–

अहक्खाय < यथाख्यात–यथा के स्थान पर अह और ख्यात को क्खाय होता है।

अहाजात < यथाजात–यथा के स्थान पर अहा हुआ है।

जहाणामए < यथानामक–य के स्थान पर ज, थ को ह, न को ण और स्वार्थिक क के स्थान पर ए।

आवकहा < यावत्कथा–य का लोप, अ स्वर शेष, अन्त्य हल् त का लोप और थ के स्थान पर ह।

जावज्जीव < यावज्जीव–य के स्थान पर ज हुआ है।

(१३) दिवस शब्द में व और सकार के स्थान पर विकल्प से यकार और हकार आदेश होते हैं। यथा–

दियहं, दियसं < दिवसं–विकल्प से व के स्थान पर य और स के स्थान पर ह; स के स्थान पर ह न होने पर दियसं रूप बनेगा।

दिवहं, दियसं < दिवसं–स के स्थान पर ह होने से प्रथम रूप और विकल्पाभाव में द्वितीय रूप बनता है।

(१४) गृह शब्द के स्थान पर गह, घर, हर और गिह आदेश होते हैं। यथा–

गहं < गृहम्–गृह के स्थान पर गह आदेश होने से।

घरं, हरं, गिह < गृहम्–गृह के स्थान पर घर, हर और गिह आदेश होने से।

(१५) म्लेच्छ शब्द के च्छ के स्थान पर विकल्प से क्खु आदेश होता है तथा एकार के स्थान पर विकल्प से एकार और उकार होते हैं। यथा–

मिलेक्खू, मिलक्खू, मिलुक्खू < म्लेच्छः–स्वर भक्ति के नियम से म और ल का पृथक्करण, इकार का आगम, च्छ के स्थान पर क्खू तथा ऐकार के स्थान पर विकल्प से अकार और उकार होते हैं।

(१६) पर्याय शब्द के र्याय भाग के स्थान पर विकल्प से रियाग, रिआग और ज्जाय आदेश होते हैं। यथा–

परियागो, परिआगो, पज्जायो < पर्यायः।

(१७) बुधादिगण पठित शब्दों के धकार के स्थान पर विकल्प से हकार आदेश होता है। यथा–

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

बुहो < बुधः–ध के स्थान पर ह और विसर्ग को एत्व।

रुहिरं < रुधिरं–ध के स्यान पर ह आदेश हुआ है।

एहंतो < एधन्तो–ध के स्थान पर ह हुआ है।

खुहा < खुधा–ध के स्थान पर ह आदेश हुआ है।

(१८) वर्ज आदि शब्दों में व के स्थान पर विकल्प से उ आदेश होता है। यथा–

आउज्जो, आवज्जो < आवर्जः–व के स्थान पर विकल्प से उकार और संयुक्त रेफ का लोप तथा ज को द्वित्व।

आउज्जण, आवज्जणं < आवर्जनम्– ,, ,, ,,

(१९) धनु शब्द के स्थान पर विकल्प से धणुहं, धणुक्खं का आगम होता है।

धणुहं, धणुक्खं, धणुं < धनुः

(२०) पुट और पुर शब्द के पकार का लोप विकल्प से होता है। यथा–

तालउडं, तालपुडं < तालपुटं–पकार का लोप, उ स्वर शेष और तकार के स्थान पर ड।

गोउरं, गोपुरं < गोपुरम्–विकल्प से पकार का लोप।

(२१) अर्धमागधी में ऐसे शब्द भी प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हैं, जिनका प्रायः महाराष्ट्री में अभाव है। यथा–

अज्झत्थिय, अज्झोवण्ण, अणुवीति, आघवणा, आघवेत्तग, आणापाणू, आवीकम्म कण्हुइ, केमहालय, पच्चत्थिमिल्ल, पाउकुव्वं, पुरत्थिमिल्ल, पोरेवच्च, महतिमहालिया, वक्क, विउस।

(२२) अर्धमागधी में ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत अधिक है, जिनके रूप महाराष्ट्री से भिन्न होते हैं। उदाहरणार्थ कुछ शब्दों की तालिका दी जाती है।

अर्धमागधी	**महाराष्ट्री**	**अर्धमागधी**	**महाराष्ट्री**
अभियागम	अब्भाअम	नितीय	णिच्च
आउंटण	आउंचण	निएय	णिअअ
आहरण	उआहरण	पडुप्पन्न	पच्चुप्पण्ण
उप्पिं	उवरिं; अवरिं	पच्छेकम्म	पच्छाकम्म
किया	किरिआ	पाय	पत्त
कीस, केस	केरिस	पुढो (पृथक्)	पुहं, पिहं
केवच्चिर	किअच्चिर	पुरेकम्म	पुराकम्म
गेहि	गिद्धि	पुव्विं	पुव्वं
चियत्त	चइअ	माय	मत्त, मेत्त

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

छच्च	छक्क	माहण	बम्हण
जाया	जत्ता	मिलक्खू, मेच्छ	मिलिच्छ
णिगण, णिगिण	णग्ग	वग्गू	वाया
णिगिणिण	णग्गत्तण	वाहणा (उपानह्)	उवाणआ
तच्च (तृतीय)	तइअ	सहेज्ज	सहाअ
तच्च (तथ्य)	तच्छ	सीआण, सुसाण	मसाण
तेगिच्छा	चिइच्छा	सुमिण	सिमिण
दुवालसंग	वारसंग	सुहम, सुहुम	सण्ह
दोच्च	दुइअ	सोहि	सुद्धि

दुवालस, बारस; तेरस, अउणावीसइ, बत्तीस, पणतीस, इगयाल, तेयालीस पणयाल, अढयाल, एगट्ठि, बावट्ठि, तेवट्ठि, छावट्ठि, अढसट्ठि, अउणत्तरि, बाबत्तरि, पण्णत्तरि, सत्तहत्तरि, तेयासी, छलसीइ, बाणउइ आदि संख्या-शब्दों के रूप अर्धमागधी में महाराष्ट्री से भिन्न हैं।

शब्दरूप

(२३) अर्धमागधी में पुल्लिंग अकारान्त शब्द के प्रथमा एकवचन में प्रायः सर्वत्र ए और क्वचित् ओ होता है।

(२४) सप्तमी एकवचन में स्सि प्रत्यय होता है।

(२५) चतुर्थी के एक वचन में आये या आते प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

(२६) अर्धमागधी में कुछ शब्दों में तृतीया के एकवचन में सा प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा–

मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा आदि। महाराष्ट्री में मणेण, वएण आदि रूप बनते हैं।

(२७) कम्म और धम्म शब्द के तृतीया के एकवचन में पालि की तरह कम्मुणा और धम्मुणा रूप होते हैं। महाराष्ट्री में कम्मेण और धम्मेण रूप बनते हैं।

(२८) अर्धमागधी में तत् शब्द के पञ्चमी के एकवचन में तेब्भो रूप भी पाया जाता है।

(२९) युष्मद् शब्द के षष्ठी के एकवचन में तव और अस्मद् शब्द के षष्ठी के बहुवचन में अस्माकं रूप पाये जाते हैं। ये रूप महाराष्ट्री में नहीं होते हैं।

अर्धमागधी के विभक्ति प्रत्यय

	एकवचन	**बहुवचन**
प्र.	ए, ओ	आ
द्वि.	ं अनुस्वार	ए

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तृ.	इण, सा	इहि, हिं
च.	आए, आते	अणं
पं.	ओ, आतो	इहिंतो
ष.	स्स	अणं
स.	सि, मि	इसु

अकारान्त जिण शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	जिणे	जिणा
द्वि.	जिणं	जिणे
तृ.	जिणेण, जिणेणं	जिणेहिं, जिणेहि
च.	जिणाए, जिणाते	जिणाणं
पं.	जिणाओ, जिणातो	जिणेहिंतो
ष.	जिणस्स	जिणाणं
स.	जिणंसि, जिणम्मि	जिणेसु
सम्बो.	भो जिणे, भो जिणा	भो जिणे

इसी प्रकार गोयम, देव, वीर आदि अकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

अर्धमागधी में भगवत् (भगवन्त) शब्द का प्रथमा के एकवचन में भगवं और भगवन्तो; मतिमन्त का मतिमं और मतिमन्तो; कारयं और कारयन्तो; प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में भगवन्तो, मतिमन्तो, कारयन्तो एवं तृतीया के एकवचन में भगवया और भगवता रूप बनते हैं। षष्ठी के एकवचन में भगवओ और भगवतो रूप होते हैं। इन शब्दों के शेष रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

(३०) तार प्रत्यान्त शब्दों में प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन में एकार और ओकार आदेश होते हैं। यथा–

पसत्थारे, पसत्थारो; कत्तारे, कत्तारो; भत्तारे, भत्तारो एवं तृतीया के एकवचन में तार के स्थान पर त्तु आदेश होने से पसत्थुणा, कत्तुणा, भत्तुणा रूप भी विकल्प से बनते हैं। शेष शब्द रूप जिण शब्द के समान होते हैं।

राय शब्द के रूप (राजन् शब्द)

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	राया	राये
द्वि.	रायं, रायाणं	रायाणो
तृ.	रन्ना	राईहिं

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

च.	रायाए, रायाते	राईणं
पं.	रायाओ, रायातो	रायेहिंतो
ष.	रन्नो	राईणं
स.	रायंसि, रायम्मि, राये	रायेसु

संस्कृत के आत्मन् शब्द के स्थान पर अर्धमागधी में अत्त और अप्प आदेश होते हैं। अतः इस शब्द के रूप निम्न प्रकार चलते हैं।

अत्त, अप्प < आत्मन्

	एकवचन	**बहुवचन**
प्र.	अत्ता, अप्पा	अत्ते, अप्पे
द्वि.	अत्ताणं, अप्पाणं	अत्ते, अप्पे, अप्पा
तृ.	अत्तणा, अप्पणा	अत्तेहिं, अप्पेहिं
च.	अत्ताए, अप्पाए	अत्ताणं, अप्पाणं
पं.	अत्ताओ, अप्पाओ	अत्ताहिंतो, अप्पाहिंतो
ष.	अत्तणो, अप्पणो	अत्ताणं, अप्पाणं
स.	अत्तंसि, अप्पंसि, अत्तम्मि, अप्पम्मि	अत्तेसु, अप्पेसु

जस, मण, वय, काय, तेय, चक्खु और जोग शब्द के तृतीया एकवचन में जससा, मणसा, वयसा, कायसा, तेयसा, चक्खुसा, जोगसा; षष्ठी के एकवचन में जससो, जसस्स; मणसो, मणस्स; वयसो, वयस्सः कायसो, कायस्स; तेयसो, तेयस्स; चक्खुसो, चक्खुस्स; जोगसो, जोगस्स एवं सप्तमी विभक्ति एकवचन में मणसि, मणंसि, मणंमि; वयसि, वयंसि, वयंमि; कायसि, कायंसि, कायंमि; तेयसि, तेयंसि, तेयंमि; चक्खुसि चक्खुंसि, चक्खुंमि और जोगसि, जोगंसि, जोगंमि रूप बनते हैं।

इकारान्त मुणि शब्द के रूप

	एकवचन	**बहुवचन**
प्र.	मुणी	मुणिणो, मुणी
द्वि.	मुणिं	मुणिणो, मुणी
तृ.	मुणिणा, मुणिस्स	मुणीहिं, मुणीहि
च.	मुणिणो, मुणिस्स	मुणीणं
पं.	मुणिणो, मुणीओ	मुणीहिंतो
ष.	मुणिणो, मुणिस्स	मुणीणं
स.	मुणिंसि, मुणिंमि, मुणी	मुणीसु
सं.	भो मुणि, भो मुणी	भो मुणिणो

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

इकारान्त शब्दों के अतिरिक्त उकारान्त शब्दों के रूप भी प्राकृत–महाराष्ट्री प्राकृत के समान चलते हैं।

पितृ शब्द का प्रथमा के एकवचन में पिता, पिया, पितरो, पियरो; द्वितीया के एकवचन में पितरं, पियरं एवं चतुर्थी के एकवचन में पिउए, पिउस्स और पिउणो रूप बनते हैं।

सव्व शब्द के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं।

क < किम् के शब्दरूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	के, को	के
द्वि.	कं	के
तृ.	केणं, केण	केहिं, केहि
च.	काए	केसिं
पं.	कम्हा, काओ	कओहिन्तो
ष.	कस्स	केसिं
स.	कस्सिं, कंसि, किंमि, के	केसु

अयं < इदम्

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	अयं, इमे	इणमो, इमो
द्वि.	इणं, इयं	इमे
तृ.	अणेण, इमेणं, इमेण	इमेहि, इमेहिं
च.	इमाए	इमेसिं
पं.	इमाओ, इमा	इमेहिंतो
ष.	अस्स, इमस्स	इमेसिं
स.	अस्सिं, इमंसि, इमंमि	इमेसु

एस < एतद्

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	एसो, एसे, ए	एए
द्वि.	एयं	एए
तृ.	एएणं, एएण	एएहिं, एएहि
च.	एयाए	एएसिं
पं.	एयाओ, एया	एएहिंतो
ष.	एएस्स	एएसिं

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

स.	एएस्सिं, एएंसि, एएंमि	एएसु

इसी प्रकार अन्य सर्वनाम शब्दों के रूप होते हैं।

अकारान्त स्त्रीलिंग माला शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	माला	मालाओ, माला
द्वि.	मालं	मालाओ, माला
तृ.	मालाए	मालाहिं
च.	मालाए	मालाणं
पं.	मालाओ	मालाहिंतो
ष.	मालाए	मालाणं
स.	मालाए	मालासु
सं.	भो माले	भो माला

स्त्रीलिंग इकारान्त दिट्ठि < दृष्टिः

	एकवचन	**बहुवचन**
प्र.	दिट्ठि	दिट्ठीओ, दिट्ठी
द्वि.	दिट्ठिं	दिट्ठीओ, दिट्ठी
तृ.	दिट्ठीए	दिट्ठीहिं
च.	दिट्ठीए	दिट्ठीणं
पं.	दिट्ठीओ	दिट्ठीहिन्तो
ष.	दिट्ठीए	दिट्ठीणं
स.	दिट्ठिंसि	दिट्ठीसु
सं.	भो दिट्ठी	भो दिट्ठीओ

ईकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के रूप भी प्राकृत के समान ही होते हैं।

स्त्रीलिंग में जा < यद् सर्वनाम शब्द के रूप

	एकवचन	**बहुवचन**
प्र.	जा	जाओ
द्वि.	जं	जाओ
तृ.	जीए, जाए	जाहिं
च.	जीसे, जाए	जासिं
पं.	जाए, जाओ	जाहिंतो

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

ष.	जीसे, जाए	जासिं
स.	जीसे, जाए	जासु
सं.	हे जा	हे जाओ

नपुंसकलिंग में शब्दों के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं।

तद्धित

अर्धमागधी में संस्कृत के समान तद्धित प्रत्ययों को अपत्यार्थक, देवतार्थक, समूहार्थक, अध्ययनार्थक, विकारावयवार्थक, अनेकार्थक, मतुबर्थक और स्वार्थिक इन आठ भागों में विभक्त किया जा सकता है। शेषिक प्रत्यय भी अर्धमागधी में पाये जाते हैं।

अपत्यार्थक और समूहार्थक

(३१) समूह, सम्बन्ध और अपत्यार्थ बतलाने के लिए इय, अण् और इञ्ज प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा–

कविलस्स इयं–काविलियं < कापालिकम्–कविल + इय–लकारोत्तर अकार का लोप और वृद्धि होने से, विभक्ति चिह्न जोड़ने से उक्त रूप बनता है।

उत्तरस्स इमं–उत्तरिञ्जं < औत्तरेयम्–उत्तर + इञ्ज–रकारोत्तर अकार का लोप और विभक्तिचिह्न जोड़ने से उक्त रूप बना है।

कोसस्स इमं–कोसेज्जं < कौशेयम्–कोस + इञ्ज–गुण और विभक्ति चिह्न जोड़ने से।

समूहार्थ

सगडाणं समूहो–सागडं < शाकटम्–सगड + अ–वृद्धि और विभक्तिचिह्न।

वेसालीए अवच्चं–वेसालिओ < वैशालिकः–वेसालियसावए < वैशालिकश्रावकः–इय (अ) प्रत्यय जोड़ा गया है।

पण्डवस्स अवच्चाणिं–पाण्डवा–पाण्डव + अण् (अ) पाण्डवा, पण्डवा; इसी प्रकार अण् प्रत्यय जोड़ देने से–लाघवं, अज्जवं, मद्दवं आदि रूप भी बनते हैं। व्यापार या वृति अर्थ–

चोरस्स वावारो–चोज्जं < चौर्यम्–चोरियं में इञ्ज और इय प्रत्यय जोड़े गये हैं।

वणियस्स वावारो–वाणिज्जं < वाणिज्यम्–व्यापार अर्थ में इञ्ज प्रत्यय।

(३२) अप्पण शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए इच्चिय और इज्जिय प्रत्यय होते हैं। यथा–

अप्पणस्स इयं–अप्पणिच्चियं < आत्मीयम्–अप्पण + इच्चिय = अप्पणिच्चियं; अप्पण + इज्जिय = अप्पणिज्जियं।

पयातीणं समूहो–पायत्तं < पदातम्–पयत्त + अण = पायत्तं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पडिहारीए इयं–पाडिहेरं < प्रातिहार्यम्–पडिहारी + अण्–पडिहारी शब्द में हा के स्थान पर हे आदेश हुआ है और रकारोत्तर इकार का लोप।

मम + इय–ममाई, ममाइए < ममत्वी, ममायितः।

(३३) पर शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए कीय प्रत्यय होता है। यथा–

पर + कीय–परकीयं।

(३४) राय शब्द से सम्बन्ध बतलाने के लिए ण्ण प्रत्यय होता है। यथा–

राय + ण्ण–राइण्णं, रायण्णं–य कार के स्थान पर इकार।

(३५) कम्म शब्द से सम्बन्ध बताने के लिए ण और अ प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

कम्म + ण = कम्मणं < कार्मणम्, कम्म + अ = कम्मअं

भवार्थक प्रत्यय

(३६) भवार्थ में इम, इल्ल, इज्ज, इय, इक, क आदि प्रत्यय जोड़े होते हैं।

अब्भंतरे भवो–अब्भंतरिए, अब्भंतरगो < आभ्यन्तरकः –अब्भंतर + इय = अब्भंतरिए, विकल्पाभाव में अब्भंतर +क (ग) =अब्भंतरगो। अवरिल्लं < आपरम्

पुरा भवं–पुरच्छिमं, पुरत्थिमं < पौरस्त्यम्–पुरत्थ + इम = पुरत्थिमं, पुरत्थ के स्थान पर पुरच्छ होने से पुरच्छिमं रूप बनता है। अन्ते भवं –अन्तिमं–अन्त + इम = अन्तिमं।

उवरि भवं–उवरिल्लं–उवर + इल्ल = उवरिल्लं < उपरितनं; उवरि + इम = उवरिमं।

भंडारे अहिगडो–भाण्डारिए < भाण्डारिकः–भण्डार+ इयण् (इए) = भाण्डारिए।

स्वार्थिक

(३७) स्वार्थ बतलाने के लिए अण्, इक, इज्ज, इज्जण्, इय, इयण्, इम, इल्ल, क और मेत्त प्रत्यय होते हैं।

जायमेत्तं, जायमित्तं < जातमात्रम्–जाय + मेत्त = जायमेत्तं–ए को इत्व होने से जायमित्तं रूप बनता है।

णियडिल्लया < निकृतिमत्ता–णियड + इल्ल = णियडिल्ल स्त्रीलिंगवाची या प्रत्यय जोड़ने से णियडिल्लया। उत्तर + इल्लं–उत्तरिल्लं < औत्तरेयम्; आण + इल्ल + इय = आणिल्लियं–आनीतकम्; छ + च्च = छच्चं, छलं < षट्कम्।

(३८) पोत शब्द से उल्ल ओर बद्ध तथा मुक्क शब्द से स्वार्थिक इल्लग प्रत्यय होता है। यथा–

पोत्त + उल्ल = पोत्तुल्लओ < पौत्रकः; बद्ध + इल्लग = बद्धेल्लगो < वद्धकः; मुक्क + इल्लग = मुक्केल्लगो < मुत्तकः।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(३९) लोभादि शब्दों से स्वर्थिक त्ता प्रत्यय होता है और त्ता के स्थान पर विकल्प से या हो जाता है। यथा–

गवेसण + त्ता = गवेसणत्ता < गवेषणिका; लोभ + त्ता = लोभत्ता, लोभया– लोभकः, सील + त्ता = सीलत्ता, सीलया < शीलकम्, लीण + त्ता = लीणत्ता, लीणया < लीनकम्; अणुकंपण+ त्ता = अणुकंपणत्ता, अणुकंपणया < अनुकम्पनकम्; दुक्खण + त्ता = दुक्खणत्ता, दुक्खणया < दुःखनकम्; लिप्पण + त्ता = लिप्पणत्ता लिप्पणया < लिम्पनकम्; पिट्टण + त्ता = पिट्टणत्ता, पिट्टणया < पिट्टनकम्।

मड + इल्लि = मइल्लिओ < मृतकः–यहाँ ड का लोप हुआ है और विभक्ति का ओ चिह्न जोड़ दिया है।

(४०) पढम शब्द से स्वार्थ में इल्लु प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा–

पढम + इल्लु = पढमिल्लुए < प्रथमकः

(४१) एग (एक) शब्द से स्वार्थ में आगि, इणिय, इय प्रत्यय होते हैं।

एग + आगि = एगागी < एकाकी; एग + अणिय = एगाणिए, एकाणिए; एक + इय–एक्किया–क को द्वित्व हुआ है।

(४२) नीसीहि शब्द से स्वार्थ में क प्रत्यय होता है। यथा–

नीसीहि + क = निसीहिगा, क के स्थान पर य होने से निसीहिया < निशीथिका, नैषेधिकी वा।

(४३) अपेक्षाकृत अतिशय–विशिष्ट अर्थ बतलाने के लिए तर प्रत्यय होता है। यथा–अइसएण तुच्छं–तुच्छतरं

(४४) तर के स्थान पर तराए आदेश होता है। यथा–बहुतराए, अप्पतराए

(४५) धम्मादि शब्दों को अतिशय अर्थ बतलाने के लिए इट्ठ प्रत्यय होता है। यथा–अइसएण धम्मी–धम्मिट्ठो < धर्मिष्ठः, अइसएण अधम्मी–अहमिट्ठो < अधर्मिष्ठः।

(४६) थेर, धीर, पिय शब्दों से अतिशय अर्थ प्रकट करने के लिए इज्ज प्रत्यय होता है और थेर के स्थान पर थ, धीर के स्थान पर ध और पिय के स्थान पर प आदेश होते हैं। यथा–

थेर + इज्ज–थ + इज्ज = थेज्जं < स्थैयम्

धीर + इज्ज–ध + इज्ज = धेज्जं < धैर्यम्

पिय + इज्ज–प + इज्ज–पेज्जं < प्रियतरम्

(४७) अर्हति और करोति अर्थ में इय और क प्रत्यय होते हैं तथा अलंकार शब्द में विकल्प से आदि स्वर की वृद्धि होती है। यथा–

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अभिसेकमर्हति–अभिसिक्को–अभिसेक + क = अभिसिक्क < आभिषिक्यः; अलंकारं करेइ त्ति–अलंकार + इय = आलंकारिए, अलंकारिए < अलंकार्यः; पसिणं करेइ त्ति–पासणिए < प्राश्निकः।

अनेकार्थक प्रत्यय

(४८) तृतीयान्त से निर्वृत, क्रीत, चरति, व्यवहरति और जीवित अर्थ में इत्ता, इय, इम, आउ, इल्ल और अ प्रत्यय होते हैं। यथा–

अब्भोवगमेन निव्वत्ता–अब्भोवगम+इत्ता = अब्भोगमिया (त्त के स्थान पर य हुआ है) <आभ्युपगमिकी; अहिगरण+इत्ता–या = अहिगरणिया < आधिकरणिकी; दण्डेण निव्वत्तं दण्डिमं–दण्ड + इय = दण्डियं < दण्डिमम्; सयेण कीयं–सतियं; सइयं–सत + इय = सतियं, तकार का लोप होने पर सइयं < शतकम्।

णाएणं ववहरति–णेयाउओ, णेयाइयो < नैयायिकः

तेल्लेणं जीवइ–तेल्लिओ–तेल + ल्लिअ = तेल्लिओ < तैलिकः।

आहारयणं ववरइ = आहारायणियं < यथारात्निकम्; तेयहियं < तैजोहितम्।

चक्खुणा णिण्गिहज्जइ–चक्खुसं < चाक्षुषम्।

अस्सिणिए जुत्ता पुण्णमासी–आसोई, अस्सोई < अश्विनी; आसाढी < आषाढी, कत्तिया < कार्त्तिकी, जेट्ठामूला < ज्येष्ठामूली, फग्गुणी < फाल्गुनी, विसाही < वैशाखी, मगसिरा < मार्गशीर्षा, साविट्ठी < श्राविष्ठा, पोट्ठवती < प्रौष्ठपदी, पोसी < पौषी, माही < माघी, चेती < चैत्री।

आसोइ पुण्णमासी अस्सिं मासंमि–आसोओ मासो–असोह + अण् = आसोओ मासो < आश्विनो मासः; वातेण उवहयं–वातीणं, वाईणं–वात + इन = वातीणं, वाईणं–तकार का लोप होने पर।

पसंगाओ आगयं–पासङ्गियं < प्रासंगिकम्। पारितोसियं < पारितोषिकम्।

(४९) पाई शब्द से भवार्थ में ण प्रत्यय होता है। यथा–

पाई + ण = पाईणं, पादीणं < प्राचीनम्

(५०) पहादि सप्तम्यन्त शब्दों से साधु अर्थ में एज्जण् प्रत्यय होता है। यथा–

पहे साहू–पाहेज्जं < पाथेयः।

(५१) सप्तम्यन्त पास शब्द से इल्ल प्रत्यय होता है। यथा–

पास + इल्ल–पासिल्लओ < पार्श्विकः।

(५२) बहि शब्द को अण् प्रत्यय के परे म और र का आगम होता है। तथा–

बहि + अ = बहिमं, बहिरं < बाह्यम्।

(५३) मज्झ शब्द से म और इल्ल प्रत्यय होते हैं। यथा–

मज्झमं, मज्झिमं, मज्झिल्लं < मध्यमम्।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मतुबर्थक प्रत्यय

(५४) हिन्दी में जो अर्थ वान् या वाला आदि प्रत्ययों के द्वारा सूचित किया जाता है, अर्धमागधी में वह अर्थ मन्त, न्त, इण् आदि प्रत्ययों से। मन्त प्रत्यय जोड़ते समय म के स्थान पर विकल्प से व आदेश होता है। यथा–

वण्ण + मन्त = वण्णवन्तो–विकल्प से त का लोप न् का अनुस्वार होने से वण्णवं < वर्णवान् रूप बनेगा।

भग + मन्तो = भगवन्तो, भगवं < भगवान्; वीइ + मन्तो = वीइमन्तो < वीचिमान्; जाति + मन्तो = जातिमन्तो < जातिमान्; तिसूलो इमस्स अस्थि–तिसूलिओ–तिसूल + इय = तिसूलिओ < त्रिशूलिकः, गंठी अत्थि अस्सि–गंठिल्लो–गंठि + ल्ल = गंठिल्लो < ग्रन्थिमान्; माया अत्थि इमस्स–माइल्लो–माया + इल्ल–यकार का लोप = माइल्लो–मायावी; कलुणा अत्थि इमस्स–कलुणो < करुणः; आउस + न्त–आउसन्तो < आयुष्मान्।

गो + मन्त–गोमी, गोमिणी–मन्त प्रत्यय के स्थान पर मी और मिणी आदेश होता है।

जस + मन्त–जसवन्तो, जसमन्तो < यशस्विन्

आयार + मन्त–आयारवन्तो, आयारमन्तो < आचारवान्; णति + मन्त = णतिवन्तो, णाइवं < ज्ञातिवान्; वुसि + मन्त = वुसिमन्ती < वशी।

जय + इण–जइणो < जयी; दोसि + इणो = दोसिणो < दोषी; वरहि + इण = वरहिणों < बर्ही ; किमि + ण = किमिणो < कृमिमान्; पंक + मन्त–स्त्रीलिंगविवक्षा में आकारान्त आदेश और म के स्थान पर व, न का लोप तथा ङीप् प्रत्यय होने से पंकावती रूए बनता है।

(५५) गन्ध, तुन्द आदि शब्दों से इल प्रत्यय होता है। यथा–

गन्ध + इल = गन्धिलो, तुन्द + इल = तुन्दिलो < तुन्दिलः।

(५६) जडा शब्द को इल प्रत्यय होने से प्रत्यय सहित विकल्प से जडुल और जडियाल का निपातन होता है। यथा–

जडा + इल = जडुलो, जडियालो, जडिलो < जटिलः।

(५७) रय शब्द से विकल्प से स्सल प्रत्यय होता है। यथा–

रय + स्सला=रयस्सला, रइला–विकल्प से इल प्रत्यय होने पर; < रजस्वला।

(५८) पम्हादि शब्दों से मतुबर्थ में विकल्प से ल प्रत्यय होता है। यथा–

पम्ह + ल = पम्हलो < पक्ष्मलः, पत्त + ल = पत्तलो < पत्रलः, तणु + ल = तणुलो < तनुलः।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(५९) दया आदि शब्दों से मतुबर्थ में आलु प्रत्यय होता है। यथा–

दया + आलु = दयालू < दयालुः; वीसरण + आलु = विसरणालु–विनाशीकः।

(६०) मतुबर्थ के लज्जा शब्द से उ प्रत्यय होता है।

लज्ज + उ = लज्जू < लज्जालुः।

(६१) मतुबर्थ में जसादि शब्दों से अंसी और स्सी प्रत्यय होते हैं। यथा–

जस + अंसी=जसंसी, जस + स्सी=जसस्सी< यशस्वी; तेय+अंसी = तेयंसी, तेयस्सी < तेजस्वी; वच्चंसी, वच्चस्सी <वर्चस्वी; ओयंसी, ओयस्सी < ओजस्वी।

भावार्थ तथा कर्मार्थ

(६२) किसी शब्द से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए अर्धमागधी में त्त और तण प्रत्यय होते हैं। यथा–

अपर + त्त = अपरत्तं < अपरत्वम्; उस्सुग + त्त = उस्सुगत्तं < उत्सुकत्वम्, अंब + त्तण = अंबत्तणं < आम्रत्वम्; तीय + तण = तीयत्तणं < तृतीयत्वम्; पहु + त्तण = पहुत्तणं < प्रभुत्वम्, अंध + त्तण = अंधत्तणं < अन्धत्वम्।

(६३) भाव अर्थ में त्ता, अद् और इयण् प्रत्यय भी होते हैं। जैसे–अरि + त्ता = अरित्ता < अरिता।

उप्पलकंद + त्ता = उप्पलकंदत्ता < उत्पलकन्दता।

आहत्तहियं, आहातहियं < याथातथिकम्–इयण् प्रत्यय हुआ है।

जहातहं < यथातथम्–अद् प्रत्यय हुआ है।

(६४) जडादि शब्दों से भाव अर्थ में इण प्रत्यय होता है। यथा–

जडा + इण= जडिणो < जटत्वम्; णग + इण = णगिणो, णिगिणो < नग्नत्वम्।

मुंड + इण = मुंडिणो < मुण्डत्वम्; संघाड + इण = संघाडिणो < संघाटत्वम्।

(६५) इस्सरादि शब्दों से भाव अर्थ में इय प्रत्यय होता है।

इस्सर + इय = इस्सरियं < ऐश्वर्यम्।

अज्जव + इय = अज्जवियं < आर्ज्जवम्; सामग्ग + इय = सामग्गियं < सामग्र्यम्।

अप्पाबहु + क = अप्पाबहुगं, अप्पाबहुकं, अप्पाबहुयं, अप्पबहुत्तं < अल्पबहुत्वम्।

(भावार्थ में क प्रत्यय हुआ है।)

(६६) उवमादि शब्दों से भाव अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। यथा–

उवमा + अण् = ओवम्मं < औपम्यम्;

आहिक्कं < अधिक्यम्, दोहग्गं < दौर्भाग्यम्, सोहग्गं < सौभाग्यम्, तेलुक्कं < त्रैलोक्यम्, तेलोक्कं < त्रैलोक्यम्।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

जुवाण + अण् = जुव्वणं, जोव्वणं, जोवणं, जोवणगं < यौवनम्–वकार के आकार को ह्रस्व और व को विकल्प से द्वित्व हुआ है।

दूय + अणू = दोच्चं < दौत्यम्–य के स्थान पर च्च आदेश हुआ है।

अहातच्चं < याथातथ्यम्; वेयावच्चं < वैयावृत्यम्।

वियावड + इयण् = वेयावडियं < वैयावृत्तिकम्।

कलुण + अण् = कोलुण्णं < कारुण्यम्।

सह + अण् = साहल्लं, साफल्लं < साफल्यम्।

सुकुमार + अण् = सोगमल्लं < सौकुमार्यम्–सुकुमार के स्थान पर सुगमल आदेश होता है।

विकारार्थक और सम्बन्धार्थक प्रत्यय

(६७) विकार अर्थ में प्रधानरूप से अण और मय प्रत्यय होते हैं। यथा–

अयो + मय = अयोमयं, फलिह + मय = फलिहमयं < स्फटिकमयम्; वओ + मय = वओमयं < वयोमयम्।

वई + मय = वईमयं < वाङ्मयम्; रयय + मय = रययामयं, रययमयं < रजतमयं–विकल्प से अकार आदेश हुआ है।

(६८) संख्यावाचक शब्दों में पूर्व अर्थ में म प्रत्यय होता है। यथा–

सत्त + म = सत्तमं < सप्तमम्, अट्ठ + म = अट्ठमं < अष्टमम्, नव+म = नवमं, अट्ठारस+सम = अट्ठारसभं <अष्टादशम्, वीसइ+म= वीसइमं < विंशतिमम्।

(६९) दु और ति शब्दों से इय, तिय और तीय प्रत्यय होते हैं। यथा–

बि + इय = बिइयं, बि + तीय = बितीयं,

वितिज्जं, दोच्चं < द्वितीयम्–य के स्थान पर ज्ज आदेश।

ति + इय = तीयं, तइयं, ततीयं, तच्चं–तृतीयम्।

(७०) छ शब्द से पूर्णार्थ में ट्ठ प्रत्यय होता है। यथा–

छ + ट्ठ = छट्ठं < षष्ठम्।

(७१) चतु शब्द से पूर्णार्थ में त्थ प्रत्यय होता है। यथा–

चतु + त्थं = चतुत्थं, चउ + त्थं = चउत्थं < चतुर्थम्।

(७२) कादि शब्दों से निर्धारण अर्थ में तर प्रत्यय होता है। यथा–

क + तर = कयरो < कतरः, एगयरो < एकतरः, अन्नयरो < अन्यतरः।

बहु + सो = बहुसो < बहुशः।

कम + सो = कमसो < क्रमशः, पगाम + सो = पगामसो < प्रकामशः, एगन्त + सो = एगन्तसो < एकान्तशः। कुंभग + सो = कुंभगसो < कुम्भकशः। एक्क + सि = एक्कसि < एकशः। एगय + तो = एगयओ, एगयतो < एकतः।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

दव्व + ओ = दव्वओ, दव्वतो = द्रव्यतः; पिट्ठओ, पिट्ठतो < पृष्ठतः, कम्म + तो = कम्मओ, कम्मतो < कर्मतः।

अत्थ + तो = अत्थतो, अत्थओ < अर्थतः।

धम्म + तो = धम्मतो, धम्मओ < धर्मतः; दुह + तो = दुहओ, दुहतो < द्विधा।

(७३) संख्यावाचक शब्दों से बारंबार अर्थ बतलाने के लिए क्खुत्तो प्रत्यय होता है। यथा–

दु + क्खुत्तो < द्विकृत्वः; ति + क्खुत्तो = तिक्खुत्तो < त्रिकृत्वः; सहस्स + क्खुत्तो = सहस्सक्खुत्तो< सहस्रकृत्वः; अणंत+ क्खुत्तो = अणंतक्खुत्तो < अनन्तकृत्वः।

स्सि–एक्कस्सि–एकशः।

(७४) प्रकार अर्थ में हा प्रत्यय होता है। यथा–

सव्व + हा = सव्वहा < सर्वथा; अण्ण + हा = अण्णहा < अन्यथा;

अट्ठ + हा = अट्ठहा < अष्टधा; ज + हा = जहा < यथा; त + हा = तहा < तथा।

(७५) ज और त शब्दों से ह और हं प्रत्यय होते हैं। यथा–

ज + ह = जह, ज + हं = जहं < यथा; त + ह = तह, त + हं = तहं < तथा।

(७६) प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है। यथा–

त + धा = तधा < तथा।

(७७) इयर शब्द से प्रकार अर्थ में इहरा शब्द का विकल्प से निपातन होता है। यथा–

इहरा, इयरहा < इतरथा।

(७८) प्रकार अर्थ में क शब्द से अह, अहं, इह और इण्णा प्रत्यय होते हैं। यथा–

क + अह = कह, क + अहं = कहं, क + इह = किह, क + इण्णा = किण्णा < कथम्।

(७९) इदं शब्द से प्रकार अर्थ में एत्थं का निपातन होता है। यथा–

इदं–एत्थं, इत्थं < इत्थम्।

(८०) एक शब्द से त प्रत्यय होता है। यथा–एग + त्त = एगत्तं।

(८१) इम शब्द से त्थ प्रत्यय होता है। यथा–

इम + त्थ = इत्थ–इम के स्थान पर इ आदेश।

इम + त्थ = एत्थ–इम के स्थान पर ए आदेश।

इम + त्थ = इयरत्थ < इतरत्र–इम के स्थान पर इयर आदेश।

इम + ह = इह–मकार का लोप।

इम + हं = इहं– ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(८२) इम, क और ज शब्दों से त्तो, ण्हि, दाणिं, ह, हं और तर प्रत्यय होते हैं और इम के मकार का लोप होता है। यथा–

इम + त्तो = इत्ता < इतः–म का लोप।

इम + त्तो = एत्तो, इतो, इओ–मकार का लोप, इ को एत्व।

विकल्प से तकार का लोप होने से इ, ओ और त को द्वित्व न होने पर इतो रूप बनता है।

क + त्तो = कत्तो, कओ < कुतः।

(८३) सप्तम्यन्त क शब्द से अहि, इह और ण्हु प्रत्यय होते हैं। यथा–

क + अहि = कहि, क + इह = किह, क + ण्हु = कण्हु, क + त्थ = कत्थ < कर्हि, कुत्र।

क + तो = कुतो–अकार को उकार आदेश हुआ है।

क + तो = कुओ– ,, ,, ,, और तकार का लोप।

क + त्थ = कुत्थ–अकार को उकार।

(८४) ज और पगाम शब्दों से पञ्चम्यर्थ में आए और तो प्रत्यय होते हैं। यथा–ज + आए = जाए < यतः।

ज + तो = जत्तो, जओ, जतो < यतः–त को द्वित्व और त का लोप होने से जओ, जतो रूप बनते हैं।

पगाम + आए = पगामाए, पगाम + तो = पगामतो < प्रकामतः।

(८५) पञ्चम्यन्त शब्दों से आ, ओ, ते और ए प्रत्यय होते हैं। यथा–

त + आ = ता < ततः, त + ओ = तो, त + ते = तते, त + ए = तए, ततो, तओ, तत्तो, तए < ततः।

(८६) पञ्चम्यन्त ज शब्द से ण्हं प्रत्यय होता है। ज + ण्हं = जण्हं, ज + म् = जं, –यतः, त + म् = तं–ततः।

दा–सव्व + दा = सया, सदा–सव्व के स्थान पर स प्रत्यय होता है।

सव्व + दा = सव्वदा, अन्न + दा = अन्नदा, अन्नया।

ण्हि–इम + ण्हि–इण्हि–इम के मकार का लोप।

इम + ण्हि = इयण्हि–म के स्थान पर य।

ण–अहु + णा = अहुणा < अधुना।

दाणिं–इम + दाणिं = दाणिं–इम का लोप और प्रत्यय शेष।

इम + दाणिं = इयाणिं, इम + दाणिं = इदाणिं < इदानीम्।

आहे–क + आहे = काहे < कर्हि, क + हि = कहि।

हि + हियं–ज + हि = जहि, क + हिय = कहियं, तहि, तहियं।

एव–क + एव + चिर = केवचिरं < कियच्चिरम्।

क + एवच् + चिर = केवच्चिरं, क + एवच् + चिरेण = केवच्चिरेण।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

धातुप्रत्यय

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	इ	न्ति
म. पु.	सि	ह
उ. पु.	मि	मो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	स्सइ, हिइ	स्सन्ति, हिन्ति
म. पु.	स्ससि, हिसि	स्सह, हिह
उ. पु.	स्सामि, हामि	स्सामो, हामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी पुरुष और सभी वचनों में इंसु प्रत्यय होता है। महाराष्ट्री में इसका अभाव है।

विध्यर्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	इज्ज, एज्ज, इज्जा, एज्जा, ए	इज्ज, एज्ज, इज्जा, एज्जा, ए
म. पु.	इज्ज, एज्ज, एज्जासि	इज्ज, एज्ज, एज्जाह
उ. पु.	इज्ज, एज्ज, एज्जमि	इज्ज, एज्ज, एज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	उ	उन्तु
म. पु.	हि	ह, एह
उ. पु.	मि	मो

कर्मणि में इज्ज प्रत्यय और प्रेरणा में आवि प्रत्यय जोड़ने के अनन्तर धातु प्रत्यय जोड़ने से कर्मणि और प्रेरणा के रूप होते हैं।

गच्छ—गमन करना

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छइ	गवच्छन्ति
म. पु.	गच्छसि	गच्छह
उ. पु.	गच्छामि	गच्छामो

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छिस्सइ, गच्छिहिइ	गच्छिस्सन्ति, गच्छिहिन्ति
म. पु.	गच्छिस्ससि, गच्छिहिसि	गच्छिस्सह, गच्छिहिह
उ. पु.	गच्छिस्सामि, गच्छिहामि	गच्छिस्सामो, गच्छिहामो

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छिंसु	गच्छिंसु
म. पु.	गच्छिंसु	गच्छिंसु
उ. पु.	गच्छिंसु	गच्छिंसु

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे
म. पु.	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे, गच्छेज्जासि	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे, गच्छेज्जाह
उ. पु.	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे, गच्छेज्जामि	गच्छिज्ज, गच्छेज्ज (ज्जा) गच्छे, गच्छेज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छउ	गच्छन्तु
म. पु.	गच्छाहि, गच्छ	गच्छह, गच्छेह
उ. पु.	गच्छामि	गच्छामो

कर्मणि रूप

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छिज्जइ	गच्छिज्जन्ति
म. पु.	गच्छिज्जसि	गच्छिज्जह
उ. पु.	गच्छिज्जामि	गच्छिज्जामो

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छिज्जिस्सइ, गच्छिज्जिहिइ	गच्छिज्जिस्सन्ति, गच्छिज्जिहिन्ति
म. पु.	गच्छिज्जिस्ससि, गच्छिज्जिहिसि	गच्छिज्जिस्सह, गच्छिज्जिहिह
उ. पु.	गच्छिज्जिस्सामि, गच्छिज्जिहामि	गच्छिज्जिस्सामो, गच्छिज्जिहामो

भूतकाल

भूतकाल के सभी वचन और सभी पुरुषों में गच्छिज्जिंसु रूप बनता है।

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जे	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जे
म. पु.	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जेज्जासि	गच्छिज्जिज्ज; गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जेज्जाह
उ. पु.	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज (ज्जा) गच्छिज्जेज्जामि	गच्छिज्जिज्ज, गच्छिज्जेज्ज, गच्छिज्जेज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छिज्जउ	गच्छिज्जन्तु
म. पु.	गच्छिज्जाहि, गच्छिज्ज	गच्छिज्जह, गच्छिज्जेह
उ. पु.	गच्छिज्जामि	गच्छिज्जामो

प्रेरणार्थक

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छावेइ	गच्छाविन्ति, गच्छावेन्ति
म. पु.	गच्छावेसि	गच्छावेह
उ. पु.	गच्छावेमि	गच्छावेमो

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छाविस्सइ, गच्छाविहिइ	गच्छाविस्सन्ति, गच्छाविहिन्ति
म. पु.	गच्छाविस्ससि, गच्छाविहिसि	गच्छाविस्सह, गच्छाविहिह
उ. पु.	गच्छाविस्सामि, गच्छाविहामि	गच्छाविस्सामो, गच्छाविहामो

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

भूतकाल

भूतकाल के सभी पुरुष और सभी वचनों में गच्छाविंसु रूप होता है।

विधि

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छावेज्ज, गच्छावेज्जा	गच्छावेज्ज, गच्छाविज्ज
	गच्छाविज्ज, गच्छाविज्जा	गच्छावेज्जा, गच्छाविज्जा
म. पु.	गच्छावेज्ज, गच्छाविज्ज	गच्छावेज्ज, गच्छाविज्ज
	गच्छावेज्जा, गच्छाविज्जा	गच्छावेज्जा, गच्छाविज्जा
	गच्छावेज्जासि	गच्छावेज्जाह
उ. पु.	गच्छावेज्ज, गच्छाविज्ज	गच्छाविज्ज, गच्छावेज्ज
	गच्छावेज्जा, गच्छाविज्जा	गच्छाविज्जा, गच्छावेज्जा
	गच्छावेज्जामि	गच्छावेज्जामो

आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छावेउ	गच्छाविन्तु, गच्छावेन्तु
म. पु.	गच्छावेहि	गच्छावेह
उ. पु.	गच्छावेमि	गच्छावेमो

अस—सत्ता

वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
अत्थि	सन्ति
सि	ह
असि, मि	मो

आज्ञा में सभी पुरुष और सभी वचनों में अत्थु और भूतकाल में प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के सभी वचनों में आसि और आसी तथा उत्तम पुरुष के एक वचन में आसि, आसी और बहुवचन में आसिमो रूप बनते हैं।

कुछ धातुरूपों का संकेत

धातु	अर्थ	कर्तरिरूप	कर्मणि	प्रेरणा
अच्छ	बैठना	अच्छइ	अच्छिज्जइ	अच्छावेइ
अण	जानना, आवाज करना	अणइ	अणिज्जइ	आणावेइ
आ + अण	उच्छ्वास ग्रहण करना	आणमइ	आणमिज्जइ	आणमावेइ

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अय	गमन करना	अयइ	अइज्जइ	आयावेइ
उव + अय	उपासना करना	उवायइ	उवाइज्जइ	उवायावेइ
इ	गमन करना	इइ	इज्जइ	इआवेइ
अइ + इ	उल्लंघन करना	अईति	अईज्जइ	अईवेइ
उव + इ	उदय होना	उवेइ	उविज्जइ	उवावेइ
प + इ	परलोक गमन	पेच्चइ	पेच्चिज्जइ	पेच्चावेइ
पति + इ	विश्वास करना	पत्तिपइ	पत्तिज्जइ	पत्तिआवेइ
वि + इ	व्यय करना	वेइ	वेइज्जइ	वेआवेइ
अहि + इ	अध्ययन करना	अहिज्जइ, अहीयइ	अहिज्जइ	अज्झावेइ
इच्छ	इच्छा करना	इच्छइ	इच्छिज्जइ	इच्छावेइ
पडि+इच्छ	स्वीकृति करना	पडिच्छइ	पडिच्छिज्जइ	पडिच्छावेइ
उंच	कुटिलता करना	उंचइ	उंचिज्जइ	उंचावेइ
पलि+उच्च	अपलाप करना	पलिउंचइ	पलिउंचिज्जइ	पलिउंचावेइ
उंज	योग करना	उंजइ	उंजिज्जइ	उंजावेइ
उव+उंज	उपयोग करना	उवउंज्जइ	उवउंज्जिज्जइ	उवउंजावेइ
वि+उंज	वियोग–वियुक्त करना	विउंजइ	विउंज्जिज्जइ	विउंज्जावेइ
आकण्ण	सुनना	आयन्नइ	आयन्निज्जइ	आयन्नावेइ
कस	आकर्षण	कसइ	कसिज्जइ	कसावेइ
का	करना	काइ	काइज्जइ	कावेइ
कुण	करना	कुणइ	कुणिज्जइ	कुणावेइ
खा	खाना	खाइ, खायइ	खाइज्जइ	खावेइ
खम	सहना	खमइ	खमिज्जइ	खामे
गम	चलना	गमइ	गम्मइ	गमावेइ
आ + गम	आगमन	आगमइ	आगम्मइ	आगमावेइ
गा	गाना	गाइ	गिज्जइ,गीयइ	गावेइ
गिज्झ	आसक्ति	गिज्झइ	गिज्झिज्जइ	गिज्झावेइ
गिला	ग्लानि	गिलाइ	गिलाइज्जइ	गिलावेइ
गुर	उद्यम करना	गुरइ	गुरिज्जइ	गुरावेइ
ग्घा	सूँघना	जिग्घइ	घाइज्जइ	घावेइ
चिगिच्छ	चिकित्सा	चिगिच्छइ	चिगिच्छिज्जइ	चिगिच्छावेइ
चिण	चयन करना	चिणइ	चिज्जइ	चिणावेइ
उव+चिण	उपचयन	उवचिणइ	उवचिज्जइ	उवचिणावेइ

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सम्+चिण	संचय करना	संचिणइ	संचिज्जइ	संचिणावेइ
जंप	बोलना	जंपइ	जंपिज्जइ	जंपावेइ
जय	जय–जीतना	जयइ	जयिज्जइ	जयावेइ
परा + जय	हारना	पराजयइ	पराजयिज्जइ	पराजयावेइ
वि + जय	विजय करना	विजवइ	विजयिज्जइ	विजयावेइ
जहा	त्याग करना	जहइ, जहाइ	जहाइज्जइ	जहावेइ
जा	जाना, उत्पन्न होना	जाइ, जायइ	जाइज्जइ	जावेइ, जवेइ
उद् + जा	ऊपर गमन करना	उज्जाइ	उज्जाइज्जइ	उज्जावेइ
पति+आ+जा	प्रत्यागमन	पच्चायाइ	पच्चायाइज्जइ	पच्चायावेइ
जाण	अवबोधन–जानना	जाणाइ, जाणइ	जाणिज्जइ	जाणावेइ
ज्झा, झिया	ध्यान करना	झाअइ, झायइ	झायइज्जइ	झायावेइ
डंस	काटना	डसइ	डंसिज्जइ	डंसावेइ
डी	आकाश में चलना	डीइ	डीइज्जइ	डीआवेइ
उद्इ + डी	,, ,,	उड्डीइ	उड्डीइज्जइ	उड्डीआवेइ
ढा	ढाना	ढाइ	ढाइज्जइ	ढावेइ
तिप्प	दुःख देना, तृप्ति तर्पण करना	तिप्पइ, तिप्पाइ	तिप्पिज्जइ	तिप्पावेइ
तुस	सन्तोष करना	तुसइ	तुसिज्जइ	तोसेइ
तस	उद्वेग करना	तसइ	तसिज्जइ	तासेइ
थुण	स्तुति करना	थुणइ	थुणिज्जइ	थुणावेइ
दल	दान देना	दलइ	दलिज्जइ	दलावेइ
दह	धारण करना	दहइ	दहिज्जइ	दहावेइ
सद् + दह	श्रद्धा करना	सद्दहइ	सद्दहिज्जइ	सद्दहावेइ
दिस	देखना, देना	देहए	दिसिज्जइ	दिसावेइ
दुस	विकृति, द्वेष	दुसइ	दुसिज्जइ	दुसावेइ
देव	विलाप	देवइ	देविज्जइ	देवावेइ
धुण	काँपना, कम्पन	धुणइ	धुव्वए	धुणावेइ
नम	नम्र होना, प्रणाम करना	नमइ, णमइ	नमिज्जइ	नामेइ
नस्स	नाश होना	नस्सइ	नासिज्जइ	नासेइ
ने	ले जाना	नेइ	निज्जइ	नेआवेइ
न्हा	स्नान करना	ण्हाइ	ण्हविज्जइ	ण्हावेइ

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पज्ज	गमन करना	पज्जइ	पज्जिज्जइ	पज्जावेइ
उद्+पज्ज	उत्पत्ति होना	उप्पज्जइ	उप्पज्जिज्जइ	उप्पज्जावेइ
णि+पज्ज	निष्पत्ति	णिप्फज्जइ	णिप्फज्जिज्जइ	निप्फज्जावेइ
पड	पतन–गिरना	पडइ	पडिज्जइ	पाडेइ
पा	पीना	पिवइ	पाइज्जइ	पज्जेइ
पुच्छ	पूछना	पुच्छइ	पुच्छिज्जइ	पुच्छेइ
बंध	बंधन	बंधइ	बंधिज्जइ	बंधावेइ
बीह	भयभीत होना	भीमइ	बीहिज्जइ	बीहावेइ
भव	सत्ता–होना	भवइ	भविज्जइ	भावेइ
भिद	विदीर्ण करना	भिंदइ	भिंदिज्जइ	भिंदावेइ
भुंज	भोजन करना	भुंजइ	भुज्जइ	भुंजावेइ
माद	प्रमाद करना	मादइ	मादिज्जइ	मादावेइ
मिल	मिलना	मिलइ	मिलिज्जइ	मिलावेइ
रंभ	आरंभ करना	रंभइ	रंभिज्जइ	रंभावेइ
रिम	गमन करना	रिमइ	रिइज्जइ	रियावेइ
रुद	रोना	रोवइ	रुदिज्जइ	रुदावेइ
लभ	प्राप्त करना	लभइ	लब्भइ	लाभेइ
लुण	छेदना, काटना	लुणइ	लुणिज्जइ	लुणावेइ
लुभ	लोभ करना	लुब्भइ	लुभिज्जइ	लोभेइ
सुण	सुनना	सुणेइ, सुणइ	सुव्वइ	सुणावेइ
वच्च	बोलना	वच्चइ	उच्चइ	वच्चावेइ
वह	पहुँचाना	वहइ	वुज्झइ	वहावेइ
वा	हवा चलना	वाइ	वाइज्जइ	वावेइ
सास	अनुशासन	सासइ	सासिज्जइ	सासावेइ
सिर	बनाना, निर्माण करना	सिरइ	सिरिज्जइ	सिरावेइ
सिव्व	सीना, बाँधना	सिव्वइ	सिव्विज्जइ	सिव्वावेइ
सीय	शोक करना, विषाद करना	सीयइ	सीइज्जइ	सीयावेइ
सुय	सोना	सुवइ, सुयइ	सुइज्जइ	सुयावेइ
सुस्सुस	सेवा करना	सुस्सूसइ	सुस्सुसिज्जइ	सुस्सुसावेइ
हण	हिंसा करना	हणइ	हम्मइ	हणावेइ

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

कर	करना	करेइ	किज्जइ, कज्जइ	कारेइ, कारावेइ
अच्च	पूजा	अच्चेइ	अच्चिज्जइ	अच्चावेइ
कास	प्रकाश, चमकना	कासेइ	कासिज्जइ	कासावेइ
किलाम	ग्लानि करना	किलामेइ	किलाविज्जइ	किलामावेइ
तक्क	कल्पना करना	तक्केइ	तक्किज्जइ	तक्कावेइ
ताड	ताडना करना	ताडेइ, तालेइ	तालिज्जइ	तालावेइ, ताडावेइ
दा	देना	देइ	दिज्जइ	दाणेइ
दीव	दीप्ति	दीवेइ	दीविज्जइ	दीवावेइ
धार	धारण करना	धारेइ	धारिज्जइ	धारावेइ
उस	निन्दा करना	उसेइ, उसइ	उसिज्जइ	उसावेइ
कह	कहना	कहेइ, कहइ	कहिज्जइ	कहावेइ
वि+कीर	विकीर्ण करना	विक्खिरइ	विक्खीरिज्जइ	विक्खीरावेइ
किण	खरीदना	किणेइ, किणइ	किणिज्जइ	किणावेइ
वि+क्किण	बेचना	विक्कणेइ	विक्कणिज्जइ	विक्कणावेइ
खिव	प्रेरणा	खिवेइ	खिप्पइ	खेवावेइ
खुभ	क्षुब्ध होना	खुब्भइ	खुभिज्जइ	खोभेइ
गिण्ह	ग्रहण करना	गेण्हइ	घेप्पइ, घिप्पइ	गिण्हावेइ
चल	हल-चल करना	चलइ, चलेइ	चलिज्जइ	चालेइ
चिट्ठ	ठहरना	चिट्ठइ	चिट्ठिज्जइ	चिट्ठावेइ
जर	जीर्ण होना	जरेइ, जरइ	जरिज्जइ	जरावेइ
धा	धारण, पोषण	धाइ	धीयए	धावेइ
पास	देखना	पासेइ	पासिज्जइ	पासावेइ
भास	भाषण करना	भासइ	भासिज्जइ	भासावेइ
मन्न	समझना	मन्नेइ	मन्निज्जइ	मन्नावेइ

कृदन्त

(८७) अर्धमागधी में सम्बन्धार्थक क्त्वा प्रत्यय के स्थान में त्ता, त्तु, तूण ड्डु, उं, ऊण, इय, इत्ता, इत्ताणं, एत्ताणं, इत्तु, च्च आदि प्रत्यय होते हैं। यथा–

इत्ता–कर + इत्ता = करित्ता, च + इत्ता = चइत्ता, पास + इत्ता = पासित्ता, विउट्ट + इत्ता = विउट्टित्ता; लभ + इत्ता = लभित्ता।

एत्ता–कर + एत्ता = करेत्ता, पास + एत्ता = पासेत्ता।

एत्ताणं–पास + एत्ताणं = पासेत्ताणं, कर + एत्ताणं = करेत्ताणं।

इत्ताणं–पास + इत्ताणं = पासित्ताणं, कर + इत्ताणं = करित्ताणं, चइ + इत्ताणं = चइत्ताणं, भुंज + इत्ताणं = भुंजित्ताणं।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

इत्तु–दुरुह + इत्तु = दुरूहित्तु, जाण + इत्तु = जाणित्तु, वध + इत्तु = वधित्तु।

च्चा–कि + च्चा = किच्चा, ण + च्चा = णच्चा, सो + च्चा = सोच्चा, भुज + च्चा = भोच्चा, चय + च्चा = चेच्चा।

इया–परिजाण + इया = परिजाणिया, दुरूह + इया = दुरूहिया।

ट्टु–क + ट्टु = कट्टु, साह + ट्टु = साहट्टु, अवह + ट्टु = अवहट्टु।

उं–सुण–सो + उँ = सोउं, दट्ठ + उं = दट्ठुं, छोढ + उं = छोढुं।

तूण–भुज + तृण–भोत्तूण, मुंच + तूण = मोत् + तूण = मोत्तूण, मुत्तूण।

ग्रह + तूण–घेत्तूण।

ऊण–अभिवाइ + ऊण = अभिवाइऊण, लभ + ऊण = लद्धूण, सुण + ऊण = सोऊण, छुभ + ऊण = छोढूण, नि + जि + ऊण = निज्जिऊण; गम + ऊण = गमिऊण, निः + चिण + ऊण = निच्छिऊण।

हेत्वर्थ कृदन्त

(८८) हेत्वर्थक तुमुन् के अर्थ में इत्तए, इत्तते, त्तुं, उं प्रत्यय होते हैं।

इत्तए–कर + इत्तए = करित्तए, प + कर + एत्तए = पकरेत्तए, वागर + एत्तए = वागरित्तए, वियागरित्तए, कारवेत्तए, कारावित्तए, कारावेत्तए।

इत्तते–उवसाम + इत्तते = उवसमित्तते।

तुं–वच् + तुं = वत्तुं।

उं–वारस + उं = वास + उं = वासिउं, वरिसेउं

वर्तमानकृदन्त

वर्तमान अर्थ में प्राकृत के समान न्त और माण प्रत्यय अर्धमागधी में भी होते हैं। यथा–

न्त–कर + न्त = करिन्तो, करेन्तो; गाय + न्त = गायन्तो, जणय + न्त = जणयन्तो, समावयन्तो।

माण–पउञ्ज + माण = पउञ्जमाणो, विक्काय + माण = विक्कायमाणो, घिप्प + माण = घिप्पमाणो, परिगिज्झ + माण = परिगिज्झमाणो, जाय + माण = जायमाणो, आढिय + माण = आढियमाणो।

(८९) ऋकारान्त धातु के त प्रत्यय के स्थान में ड होता है। यथा–

कृ + त = कड, म + त = मड, अभिहड, वावड, संवुड, वियड, वित्थड।

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

जैन महाराष्ट्री

अर्धमागधी के आगम ग्रन्थों के अतिरिक्त चरित, कथा, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल और स्तोत्र आदि विषयक प्राकृत का विशाल साहित्य है। इस साहित्य की भाषा को वैयाकरणों ने जैन महाराष्ट्री नाम देकर महाराष्ट्री और अर्धमागधी से पृथक् इस भाषा का अस्तित्व बताया है। यद्यपि काव्य और नाटकों की भाषा से यह भाषा बहुत कुछ अंशों में मिलती-जुलती है; फिर भी यह एक स्वतन्त्र भाषा है। इसका रूप महाराष्ट्री और अर्धमागधी के मिश्रण से निर्मित हुआ है। आगम ग्रन्थों पर रचे गये बृहत्कल्पभाष्य, व्यवहारसूत्रभाष्य, विशेषावश्यकभाष्य एवं निशीथचूर्णि प्रभृति टीका और भाष्य ग्रन्थों में भी इस भाषा का प्रयोग पाया जाता है। धर्मसंग्रहणी, समराइच्चकहा, कुवलयमाला, वसुदेवहिण्डी, पउमचरिय प्रभृति ग्रन्थों में भी इसी भाषा का प्रयोग हुआ है। हमें ऐसा लगता है कि काव्यों और नाटकों की भाषा से यह जैन महाराष्ट्री प्राचीन है। अर्धमागधी की भाषागत प्रवृत्तियों में थोड़ा-सा परिवर्तन होकर जैन महाराष्ट्री का विकास हुआ होगा और इसी जैन महाराष्ट्री से व्यंजन वर्णों का लोप होकर काव्य और नाटकों की महाराष्ट्री का प्रादुर्भाव हुआ है। जैन महाराष्ट्री की मूलप्रवृत्ति अर्धमागधी से सम्बन्ध रखती है। इसमें अधिक व्यञ्जनों का लोप नहीं होता है। य और व जैसे मृदुल व्यञ्जनों को अत्यधिक स्थान प्राप्त है। अर्धमागधी और शौरसेनी के समान इस भाषा की मूलप्रवृत्ति पर संस्कृत का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है। ध्वनिपरिवर्तन सम्बन्धी जैन महाराष्ट्री की निम्न विशेषताएँ हैं–

(१) क के स्थान में अनेक स्थलों में ग पाया जाता है। यथा–

सावग < श्रावक–क के स्थान पर ग हुआ है।
णिगरं < निकरम्–मध्यवर्ती क के स्थान पर ग।
तित्थगरो < तीर्थकरः–क के स्थान पर ग।
लोगो < लोकः– ,, ,,
आगरिसी < आकर्षः– ,, ,,
आगारो < आकारः– ,, ,,
उवासगो < उपासकः– ,, ,,
दुगुल्लं < दुकूलम्– ,, ,,
गेंदुअं < कन्दुकम्– ,, ,, इस शब्द का विकल्प से जैन महाराष्ट्री में कन्दुक रूप भी पाया जाता है।

(२) लुप्त व्यञ्जनों के स्थान पर य श्रुति होती है। यथा–

कहाणयं < कथानकम्–यहाँ लुप्त क के स्थान पर य श्रुति।
भगवया < भगवता–लुप्त त के स्थान पर य।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

चेयणा < चेतना–लुप्त त के स्थान पर य।
भणियं < भणितम्– ,, ,,
विसायं < विषादं–लुप्त द के स्थान पर य।
महारायस्स < महाराजस्य–लुप्त ज के स्थान पर य।
रययं < रजतम्–लुप्त ज और त के स्थान पर य।
पयावई < प्रजापतिः –लुप्त ज के स्थान पर य।
गया < गदा–लुप्त द के स्थान पर य।
कयग्गहो < कचग्रहः–लुप्त च के स्थान पर य।
कायमणी < काचमणिः– ,, ,,
लायण्णं < लावण्यम्–लुप्त व के स्थान पर य।
मयणो < मदनः–लुप्त द के स्थान पर य।

यह प्रवृत्ति काव्य और नाटकों की भाषा में नहीं पायी जाती है और न अर्धमागधी में सार्वत्रिक मिलती है। महाराष्ट्री में व्यञ्जनों का लोप होने पर मात्र स्वर शेष रह जाते हैं। य श्रुति की प्रवृत्ति जैन महाराष्ट्री का प्रमुख चिह्न है।

(३) शब्द के आदि और मध्य में भी ण की तरह न रह जाता है। यह प्रवृत्ति अर्धमागधी की देन है। यथा–

नाणुमयमेएसिं < नानुमतमेतयोः –आदि न ज्यों का त्यों स्थित है।
नियमोववसिहिं < नियमोपवासैः– ,, ,,
नियट्टीए < निकृत्य– ,, ,,
नूणमेसा < नूनमेषा– ,, ,,
भत्तिनिब्भरा < भक्तिनिर्भरा–मध्य न ज्यों का त्यों स्थित है।
अणुन्नविय < अनुज्ञाप्य– ,, ,,
कहमन्नया < कथमन्यथा– ,, ,,
अलद्धनिद्दा < अलब्धनिद्रा– ,, ,,
उववन्नाओ त्ति < उपपन्ने इति– ,, ,,
अन्नहा < अन्यथा– ,, ,,
कन्नयाए < कन्यकायाः– ,, ,,
पडिवन्ना < प्रतिपन्ना–अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।
नुवन्ना एसा < निपन्ना एषा–आदि और अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।
नुवन्नो < निपन्नः– ,, ,, ,,
समुप्पन्ना < समुत्पन्ना–अन्तिम न ज्यों का त्यों स्थित है।
उववन्नो < उत्पन्नः– ,, ,, ,,
विवाहजन्नो < विवाहयज्ञः– ,, ,,

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(४) यथा और यावत् के स्थान में क्रमशः जहा और जाव की तरह अहा और आव भी होते हैं।

(५) कुछ पदों में समास होने पर उत्तरपद के पूर्व म् का आगम हो जाता है। यथा–

अन्नमन्न < अन्न + अन्न–उत्तर पद के अन्न के पूर्व मकारागम।

एगमेग = एग + एग–उत्तर पद एग के पूर्व मकारागम।

चित्तमाणंदियं = चित्त + आणंदियं = उत्तर पद आणंदियं के पूर्व मकारागम।

(६) पाय, माय, तेगिच्छिग, पडुप्पण, साहि, सुहुम आदि शब्दों का पत्त, मेत्त, चेइच्छय आदि की तरह उपयोग होता है।

(७) तृतीया के एकवचन में अर्धमागधी के समान कहीं-कहीं सा का प्रयोग भी पाया जाता है और प्रथमा विभक्ति के एकवचन में महाराष्ट्री के समान ओ पाया जाता है। यथा–

मन + सा = मणसा < मनसा;–जिण–जिणो।

वय + सा = वयसा < वचसा; वीर–वीरो।

काय + सा = कायसा < कायेन; गोयम = गोयमो।

(८) आइक्खइ, कुव्वइ, सडइ, सोल्लइ, वोसिरइ प्रभृति धातुरूप उपलब्ध होते हैं।

(९) क्त्वा प्रत्यय के रूप अर्धमागधी के च्चा और त्तु प्रत्यय जोड़ने से भी बनाये जाते हैं। महाराष्ट्री तूण और ऊण भी पाये जाते हैं। यथा–

सुण + च्चा = सो + च्चा = सोच्चा < श्रुत्वा।

कृ + च्चा = कि + च्चा = किच्चा < कृत्वा।

वंदित्तु–वंदि + त्तु = वंदित्तु < वंदित्वा।

आलोचि + ऊण = आलोचिऊण < आलोच्य।

चवि + ऊण = चविऊण < च्युत्वा।

मुच् + तूण–मोत्तू + तूण = मोत्तूण < मुक्त्वा।

(१०) त प्रत्ययान्त रूप ड में परिवर्तित दिखलायी पड़ते हैं। यथा–

कडं < कृतम्–त के स्थान पर ड।

वावडं < व्यापृतम्–,, ,,

संवुडं < संवृत्तम्– ,, ,,

(११) अस् धातु का सभी काल, वचन और सभी पुरुषों में अर्धमागधी के समान आसी रूप पाया जाता है। सभी कालों के बहुवचन में महाराष्ट्री के समान अहेसी रूप भी उपलब्ध होता है।

अवशेष नियम प्राकृत के समान ही जैन महाराष्ट्री में प्रवृत्त होते हैं।

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पैशाची

पैशाची एक बहुत प्राचीन प्राकृत भाषा है। इसकी गणना पालि, अर्धमागधी और शिलालेखीय प्राकृतों के साथ की जाती है। चीनी–तुर्किस्तान के खरोष्ट्री शिलालेखों में पैशाची की विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। डॉ. जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार पैशाची पालि का एक रूप है, जो भारतीय आर्यभाषाओं के विभिन्न रूपों के साथ मिश्रित हो गयी है।

पैशाची की प्रकृति शौरसेनी है। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पञ्चाल इन तीन भेदों में विभक्त किया है। अतः सिद्ध होता है कि पैशाची भाषा पाण्ड, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेशों में बोली जाती थी। अब यहाँ यह आशंका उत्पन्न होती है कि इतने दूरवर्ती इन तीनों प्रदेशों में एक ही भाषा का व्यवहार क्यों और कैसे होता था ? इसका उत्तर यह हो सकता है कि पैशाची भाषा एक जातिविशेष की भाषा थी। यह जाति जिस–जिस स्थान पर गयी, उस–उस स्थान पर अपनी भाषा को भी लेती गयी। अनुमान है कि यह कैकय देश में उत्पन्न हुई और बाद में उसी के समीपस्थ शूरसेन और पंजाब तक फैल गयी। डॉ. सर जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार पैशाची का आदिम स्थान उत्तर–पश्चिम पंजाब अथवा अफगानिस्तान प्रान्त है। यहाँ से इस भाषा का अन्यत्र विस्तार हुआ है। डॉ. हार्नलि का मत है कि अनार्य लोग आर्यजाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे, वह विकृत रूप ही पैशाची भाषा का है। दूसरे देशों में यों कहा जा सकता है कि द्राविड भाषा से प्रभावित आर्यभाषा का एक रूप पैशाची प्राकृत है। पंजाब, सिन्ध, विलोचिस्तान और काश्मीर की भाषाओं पर इसका प्रभाव आज भी लक्षित होता है।

वाग्भट्ट ने पैशाची को भूतभाषा कहा है। पिशाच नाम की एक जाति प्राचीन भारत में निवास करती थी। उसकी भाषा को पैशाची कहा गया है। पैशाची की व्याकरण सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ है–

(१) पैशाची शब्दों में आदि में न रहने पर, वर्गों के तृतीय और चतुर्थ वर्णों के स्थान पर उसी वर्ग के क्रमशः प्रथम और द्वितीय वर्ण हो जाते हैं।[१] यथा–

गकनं < गगनम्–ग के स्थान पर क हुआ है।

मेखो < मेघः–कवर्ग के चतुर्थ वर्ण घ के स्थान पर उसी वर्ग का द्वितीय वर्ण ख हुआ है।

---

१. वर्गाणां तृतीयचतुर्थयोरयुजोरनाद्योराद्यौ १०।३ वर.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

राचा < राजा–चवर्ग के तृतीय वर्ण ज के स्थान पर उसी वर्ग का प्रथम वर्ण च हुआ है।

णिच्छरो < णिज्झरो < निर्झरः–ज्झ के स्थान पर च्छ।

दसवतनो < दसवदनो < दशवदनः–मध्यवर्ती द के स्थान पर त।

सलफो < सलभो < शलभः–भ के स्थान पर फ।

(२) पैशाची में ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ आदेश होता।[१] जैसे–

पञ्ञा < प्रज्ञा–ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ हुआ है।

सञ्ञा < संज्ञा– ,, ,,

सव्वञ्ञो < सर्वज्ञः– ,, ,,

विञ्ञानं < विज्ञानम्– ,, ,,

(३) राजन् शब्द के रूपों में जहाँ–जहाँ ज्ञ रहता है, वहाँ–वहाँ ज्ञ के स्थान में विकल्प से चिञ् आदेश होता है।[२] यथा–

राचिञा लपितं, रञ्ञा लपितं < राज्ञा लपेतम्–विकल्प से ज्ञ के स्थान में चिञ् आदेश होने पर राचिञा और विकल्पाभाव में ज्ञ के स्थान पर ञ्ञ आदेश होने से राञ्ञा रूप बना है।

राचिञो धनं, रञ्ञो धनं < राज्ञो धनम्।

(४) पैशाची में न्य और ण्य के स्थान में ञ्ञ आदेश होता है।[३] यथा–

कञ्ञका, अभिमञ्ञू < कन्या, अभिमन्युः–न्य के स्थान पर ञ्ञ।

पुञ्ञाहं < पुण्याहम्– ,, ,, ,, ,,

(५) पैशाची में णकार का नकार होता है।[४] यथा–

गुनगनयुत्तो < गुणगणयुक्तः–शौरसेनी के ण के स्थान पर न।

गुनेन < गुणेन– ,, ,,

(६) पैशाची में तकार और दकार के स्थान में तकार हो जाता है।[५] यथा–

भगवती, पव्वती < भगवती, पार्वती–तकार के स्थान त हुआ है।

मतनपरवसो < मदनपरवशः–द के स्थान पर त आदेश हुआ है।

सतनं < सदनम्– ,, ,,

तामोतरो < दामोदरः– ,, ,,

होतु < होदु–शौरसेनी के दु के स्थान पर तु हुआ है।

(७) पैशाची में ल के स्थान ळकार हो जाता है।[६] यथा–

---

१. ज्ञो ञ्ञ पैशाच्याम् ८।४।३०३ हे.
२. राज्ञो वा चिञ् ८।४।३०४।
३. न्य-ण्योर्ञ्ञः ८।४।३०५।
४. णो नः ८।४।३०६।
५. तदोस्तः ८।४।३०७।
६. लो ळः ८।४।३०८।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सलिळं < सलिलम्–ल के स्थान पर ळ हुआ है।

कमळं < कमलम्– ,, ,,

(८) पैशाची श और ष के स्थान पर स आदेश होता हैं।[१] यथा–

सोभति < शोभते–श के स्थान पर स हुआ है।

सोभनं < शोभनं– ,, ,,

ससी < शशी– ,, ,,

विसमो < विषमः–मूर्धन्य ष के स्थान पर स हुआ है।

विसानो < विषाणः– ,, ,,

(९) पैशाची में हृदय शब्द के यकार के स्थान में पकार हो जाता है।[२] यथा–

हितपकं < हृदयकम्–द के स्थान पर त और य के स्थान पर प आदेश होता है।

(१०) पैशाची में टु के स्थान पर विकल्प से तु आदेश होता है। यथा–

कुतुम्बकं, कुटुंबकं < कुटुम्बकम्।

(११) पैशाची में कहीं-कहीं र्य, स्न और ष्ट के स्थान में रिय, सिन और सट आदेश होते हैं। यथा–

भारिया < भार्या–स्वरभक्ति के नियमानुसार र और य का पृथक्करण होकर इत्व हो गया है।

सिनातं < स्नातम्– ,, ,, ,,

कसटं < कष्टम– ,, ,, ,,

सनानं < स्नानम्–स्वरभक्ति के नियमानुसार स और न का पृथक्करण।

सनेहो < स्नेहः– ,, ,, ,,

(१२) पैशाची में यादृश, तादृश आदि के दृ के स्थान पर ति आदेश होता है। यथा–

यातिसो < यादृशः–दृ के स्थान पर ति और श को स।

तातिसो < तादृशः– ,, ,,

भवातिसो < भवादृशः– ,, ,,

अञ्ञातिसो < अन्यादृशः–न्य के स्थान पर ञ्ञ और दृ को ति।

युम्हातिसो < युष्मादृशः–ष्म के स्थान पर म्ह और दृ के स्थान पर ति।

अम्हातिसो < अस्मादृशाः–स्म ,, ,,

(१३) पैशाची में शौरसेनी के ज्ज के स्थान में च्च आदेश होता है। यथा–

कच्चं < कज्जं < कार्यम्–शौरसेनी के ज्ज के स्थान पर च्च।

---

१. श–षोः सः ८।४।३०९। २. हृदये यस्य पः ८।४।३१०

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१४) पैशाची में शौरसेनी का सुज्ज शब्द ज्यों का त्यों रह जाता है।

सुज्जो < सूर्यः–शौरसेनी में र्य के स्थान में ज्ज आदेश होता है और पूववर्ती ऊकार को ह्रस्व होने से सुज्ज बनता है। पैशाची में भी यही रूप पाया जाता है।

(१५) पैशाची में स्वरों के मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, य और व का लोप नहीं होता। यथा–

लोक < लोक–क का लोप नहीं हुआ।

इंगार < अंगार–ग का लोप नहीं हुआ है।

पतिभास < प्रतिभास–प्र के स्थान पर प और त का लोप नहीं हुआ।

करणीय < करणीय–य ज्यों का त्यों रह गया है।

सपथ < शपथ–प का लोप नहीं हुआ।

(१६) पैशाची में ख, भ और थ के स्थान पर ह नहीं होता। यथा–

साखा < शाखा–श के स्थान पर स और ख के स्थान पर ह नहीं हुआ।

पतिभास < प्रतिभास–भ के स्थान पर ह नहीं हुआ।

सपथ < शपथ–प के स्थान में व भी नहीं हुआ और न थ को ह ही हुआ।

(१७) पैशाची में ट के स्थान पर ड और ठ के स्थान पर ढ नहीं होता। यथा–

भट < भट–ट के स्थान पर ट ही रह गया है।

मठ < मठ–ठ के स्थान पर ठ ही रह गया है।

(१८) पैशाची में रेफ के स्थान में ल और ह के स्थान में घ नहीं होता। यथा–

गरुड < गरुड–र के स्थान में ल नहीं हुआ।

रेफ < रेफ– ,, ,,

दाइ < दाइ–ह के स्थान में घ नहीं हुआ।

शब्दरूप

(१९) पञ्चमी के एकवचन में आतो और आतु प्रत्यय होते हैं। यथा–

जिनातु, जिनातो।

(२०) पैशाची में तद् और इदम् शब्दों में टा प्रत्यय सहित पुंल्लिङ्ग में नेन और स्त्रीलिंग में ताए आदेश होते हैं। यथा–

नेन कतसिनानेन < तेन कृतस्नानेन अथवा अनेन।

पूजितो च नाए < पूजितश्चानया।

वीर शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	वीरो	वीरा
बी.	वीरं	वीरे, वीरा
त.	वीरेन, वीरेनं	वीरेहिं, वीरेहि

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

च.	वीराय, वीरस्स	वीरान, वीरानं
पं.	वीरातो, वीरातु	वीरातो, वीराहिंतो, वीरासुन्तो, वीरेहिंतो, वीरेसुन्तो
छ.	वीरस्स	वीरान, वीरानं
स.	वीरंसि, वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं

इकारान्त इसि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	इसी	इसउ, इसओ, इसिनो
वी.	इसिं	इसिनो, इसी
त.	इसिना	इसीहि, इसीहिं
च.	इसिनो, इसिस्स	इसीन, इसीनं
पं.	इसितो, इसिस्स	इसीओ, इसीउ, इसीहिंतो, इसीसुंतो
छ.	इसिनो, इसिस्स	इसीन, इसीनं
स.	इसिंसि	इसीसु, इसीसं

इसी प्रकार अग्गि, मुनि, बोहि और कवि आदि इकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

भानु शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प.	भानू	भानुनो, भानवो, भानूओ
वी.	भानुं	भानुनो, भानू
त.	भानुना	भानूहि, भानूहिं
च.	भानुनो, भानुस्स	भानून, भानूनं
पं.	भानुतो, भानुतु	भानुत्तो, भानूओ, भानूउ, भानुहिंत्तो, भानुमुंतो
छ.	भानुनो, भानुस्स	भानून, भानूनं
स.	भानुंसि, भानुम्मि	भानूसु, भानूसुं

नपुंसकलिंङ्ग के शब्दरूप शौरसेनी के समान होते हैं।

सर्वादि गण के शब्दों के रूप पञ्चमी विभक्ति एकवचन को छोड़, अवशेष रूप शौरसेनी के समान ही होते हैं। पञ्चमी विभक्ति एक वचन में अतो और अतु प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

इम < इदम् शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प.	अयं, इमो	इमे
वी.	इमं, इनं, नं	इमे, इमा, ने, ना

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

त.	इमेन, इमेनं, नेन	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ
च.	इमस्स, अस्स, से	सिं, इमेसिं, इमान, इमानं
पं.	इमातु, इमातो	इमत्तो, इमाउ, इमाओ इमाहिंतो, इमासुंतो
छ.	इमस्स, अस्स, से	इमान, इमानं
सं.	इमस्सि, इमम्मि, अस्सिं, इह	इमेसु, इमेसुं

एअ < एतद्

	एकवचन	**बहुवचन**
प.	एस, एसो	एते
वी.	एतं	एते, एता
त.	एतेन, एतिना	एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ
च.	एतस्स	एतेसिं, एतान
पं.	एतातो, एतातु	एआउ, एआओ, एआहि, एआहिंतो, एएहिंतो
छ.	एतस्स	एतेसिं, एतान
स.	एत्थ, अयम्मि, एअस्सिं	एतेसु, एएसुं

राया < राजन्

	एकवचन	**बहुवचन**
प.	राया	रायानो, राइनो
वी.	राइनं, रायं	राये, राया, राचिओ, रञ्ञो
त.	राचिआ, राचिञ्ञा	राईहि, राईहिं, राईहिँ
च.	राचिओ, रञ्ञो	राईन, राईनं, रायान, रायानं
पं.	रायातो, रायातु, राचिओ, रञ्ञो	राइनो, राईओ, राईहिंतो, राईसुंतो
छ.	राचिओ, रञ्ञो	राईन, राईनं, रायान, रायानं
स.	रचिञ्चि, रञ्ञि	रायेसु, रायेसुं, राईसु, राईसुं
सं.	रायं, राया, रायो	रायानो, राइनो

क्रियारूप

(२०) पैशाची में शौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों के स्थान पर ति और ते प्रत्यय होते हैं।

(२१) पैशाची में भविष्यत्काल में स्सि प्रत्यय के स्थान पर एय्य प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा–हुवेय < भविष्यति।

(२२) पैशाची में भाव और कर्म में ईअ तथा इज्ज के स्थान में इय्य प्रत्यय होता है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

हस धातु—वर्तमानकाल

	एकचवन	बहुवचन
प्र. पु.	हसति, हसेते	हसन्ति, हसंते, हसिरे, हसेइरे
म. पु.	हससि, हससे	हसित्था, हसध, हसह
उ. पु.	हसमि, हसेमि	हसमो, हसमु, हसम

कृदन्त

क्त्वा प्रत्यय के स्थान में तून, त्थून और द्धून प्रत्यय होते हैं। यथा–

पठितून < पठित्वा–पठ धातु में तून प्रत्यय जोड़ने से।

गन्तून < गत्वा–गम् धातु में तून प्रत्यय जोड़ने से।

नत्थून < नष्ट्वा–नश् धातु में त्थून प्रत्यय जोड़ने से।

तत्थून < दृष्ट्वा–दृश् धातु में त्थून प्रत्यय जोड़ने से।

नद्धून < नष्ट्वा–नश् धातु में द्धून प्रत्यय जोड़ने से।

तद्धून < दृष्ट्वा–दृश् धातु में द्धून प्रत्यय जोड़ने से।

पैशाची के कुछ शब्द

पैशाची	संस्कृत	ध्वनिपरिवर्तन
मेखो	मेघः	घ के स्थान पर ख हुआ है।
गकनं	गगनम्	ग के स्थान पर क।
राचा	राजा	ज के स्थान पर च।
णिच्छरो	निर्झरः	र्झ के स्थान पर च्छ।
वटिसं	वडिशम्	ड के स्थान पर ट।
दसवतनो	दशवदनः	द के रथान पर त।
माथवो	माधवः	ध के स्थान पर थ।
गोविन्तो	गोविन्दः	द के स्थान पर त।
केसवो	केशवः	श के स्थान पर स।
सरफसं	सरभसं	भ के स्थान पर फ।
सलफो	शलभः	,, ,,
संगामो	संग्रामः	ग्र के स्थान पर ग।
पिव	इव	इव के स्थान पर पिव आदेश।
तलुनी	तरुणी	र के स्थान पर ल।
कसटं	कष्टम्	स्वरभक्ति के नियम से ष्ट का पृथक्करण।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सनानं	स्नानम्	स्वरभक्ति के नियम से स्न का पृथक्करण।
सनेहो	स्नेहः	,, ,, ,,
भारिआ	भार्या	,, र्या का ,,
विञ्ञातो	विज्ञातः	ज्ञ के स्थान पर पालि के समान ञ्ञ।
सव्वञ्ञो	सर्वज्ञः	,, ,, ,,
कञ्ञा	कन्या	न्य के स्थान पर ञ्ञ।
कच्चं	कार्यम्	र्य के स्थान पर च्च।
दातूनं	दत्त्वा	क्त्वा के स्थान पर तून।
घेत्तूनं	गृहीत्वा	,, ,, ,,
हितअकं	हृदयकम्	हृदयक के स्थान पर हितअकं आदेश।

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

चूलिका पैशाची

यद्यपि वररुचि आदि वैयाकरणों ने पैशाची के लक्षणों के अन्तर्गत ही चूलिका पैशाची का अनुशासन बताया है; पर हेमचन्द्र और षड्भाषाचन्द्रिका के कर्ता पं. लक्ष्मीधर ने इस भाषा का भी स्वतन्त्र अस्तित्व मानकर इसकी विशेषताओं का निर्देश किया है। चूलिका पैशाची के कुछ उदाहरण हेमचन्द्र के कुमारपाल और जयसिंह सूरि के हम्मीरमर्दन नामक नाटक तथा षड्भाषा स्तोत्रों में पाये जाते हैं। यह सत्य है कि चूलिका पैशाची पैशाची का ही एक भेद है। इसमें पैशाची की अपेक्षा अधिक विशेषताएँ दृष्टिगोचर नहीं होतीं। ध्वनि परिवर्तन सम्बन्धी निम्न विशेषताएँ हैं।

(१) चूलिका पैशाची में र के स्थान में विकल्प से ल होता है। यथा–

गोली < गोरी–र के स्थान पर ल।

चलन < चरणं–र के स्थान पर ल ओर ण को न।

लुद्धो < रुद्रः–र के स्थान पर ल, संयुक्त रेफ का लोप और द को द्वित्व।

लाचा < राजा–र को ल और ज को च।

लामो < रामो–र के स्थान पर ल।

हलं < हरं–र के स्थान पर ल।

(२) चूलिका पैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान पर प्रथम और द्वितीय अक्षर होते हैं। यथा–

मक्कनो < मार्गणः– संयुक्त रेफ का लोप और ग के स्थान में क तथा क को द्वित्व और ण को न।

नको < नगः–ग के स्थान पर क।

मेखो < मेघः–घ के स्थान पर ख।

वखो < व्याघ्रः–संयुक्त य का लोप तथा संयुक्त रेफ का लोप और घ को ख।

चीमूतो < जीमूतः–ज के स्थान में च।

छलो < झरः–झ के स्थान पर छ और रेफ को ल।

तटाकं < तडाकं–ड के स्थान में ट।

टमलुको < डमरुकः–ड को ट और रु के स्थान में ल।

काढं < गाढम्–ग के स्थान में क।

ठक्का < ढक्का–ढ के स्थान में ठ।

मतनो < मदनः–द के स्थान में त।

तामोतलो < दामोदरः–द के स्थान में त और रेफ को ल।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मथुलो < मधुरो–ध के स्थान में थ और रेफ को ल।
थाला < धारा–ध के स्थान में थ और रेफ को ल।
पाटपो < बाडवः–ब के स्थान में प और ड को ट।
पालो < बालः–ब के स्थान पर प।
लफसो < रभसः–र के स्थान पर ल और भ के स्थान पर फ।
लंफा < रंभा– ,, ,, ,, ,,
फवो < भवः–भ के स्थान पर फ।
फकवती < भगवती–भ के स्थान पर फ और ग को क।
पनमथ < प्रणमत–ण के स्थान में न और त को थ।
नखतप्पनेसुं < नखदर्पणेषु–दर्प के स्थान पर तप्प और ण को न।
चलनग्ग < चरणाग्र–र को ल, ण को न और संयुक्त रेफ का लोप और ग को द्वित्व।
एकातस < एकादश–द को त और श को स।
तनुथलं < तनुधरं–ध के स्थान पर थ और र को ल।
पातुक्खेवेन < पादोत्क्षेपेण–द को त, क्ष के स्थान पर क्ख।
वसुथा < वसुधा–ध को थ।
नमथ < नमत–त को थ।

(३) चूलिका पैशाची में आदि अक्षरों में उक्त नियम लागू नहीं होता। यथा–
गती < गतिः–ग के स्थान पर हेमचन्द्र के मत से क नहीं हुआ।
धम्मो < धर्मः–ध के स्थान पर थ नहीं हुआ।
जीमूतो < जीमूतः–ज के स्थान पर च नहीं हुआ।
डमरुक्को < डमरुकः–ड के स्थान पर ट नहीं हुआ।
नियोजितं < नियोजितम्–युज् धातु में भी उक्त नियम नहीं लगा।
घनो < घनः–घ के स्थान पर ख नहीं हुआ।
जनो < जनः–ज के स्थान पर च नहीं हुआ।
झल्लरी < झल्लरी–झ के स्थान पर छ नहीं हुआ।

(४) शब्दुरूप और धातुरूप चूलिका पैशाची में पैशाची के समान ही होते हैं, परन्तु वर्णपरिवर्तन सम्बन्धी नियमों का प्रयोग कर लेना आवश्यक है। यथा–
फोति < भवति–भ को फ हुआ है।
फवते < भवते– ,,
फवति < भवति– ,,
फोइय्य < भोइय्य– ,,

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY